आपकी परेशानीयोंका हल

अस्माउल हुस्ना

संपादक और प्रकाशक

अब्दुलकादिर फातीवाला (वलसाड)

मौलाना मुहम्मद यूनुस मुन्शी, फलाही (वलसाड)

मुहम्मद बशीर अघाडी (मुम्बई)

आपकी परेशानीयोंका हल

अस्माउल् हुस्नामें

संपादक और प्रकाशक

अब्दुलकादिर फातीवाला (वलसाड)
मौलाना मुहम्मद यूनुस मुन्शी, फलाही (वलसाड)
मुहम्मद बशीर अघाडी (मुम्बई)

प्रिन्टर्स

मव्लाना झियाउर्रहीम रहीमी, { हिदायत आर्ट }

सगरामपुरा, तलावडी, सुरत

Mobile No. : 099740 34310

प्रकाशककी दुआ

हे अल्लाह तआला !

- हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु अल्यहि व सल्लमको.
- अम्बियाए किराम अलयहिमुस्सलातु वस्सलामको.
- हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी आल, अव्लाद. अझवाजे मुतह्हरात (उम्मुल् मुअ्मिनीन)को और अहले बय्त रिदवानुल्लाहि तआला अलयहिम अज्मईनको,
- अस्हाबे किराम रिदवानुल्लाहि तआला अलयहिम अजमईनको,
- ताबिईन, तब्अे ताबिईन और औलियाए किराम रहमतुल्लाहि अलयहिम अजमईनको,
- उम्मते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमको,
- तमाम मुअ्मिनीन और मुअ्मिनात, मुस्लिमीन और मुस्लिमातको,
- **हमारे मरहूम वालिद साहब और वालीदा साहीबा को, तमाम अधाडी परिवारको**
- इस किताबका सवाब अता फरमाओ और तमामकी मगफिरत फरमाओ ! आमीन !

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

हे हमारे परवरदिगार ! **हमारे अमलोको कुबुल फरमाओ** !

बेशक, आप सुननेवाले और जाननेवाले हैं !

दुआगो,

मुहम्मद बशीर अघाडी

अल्लाह तआलाके अस्माए हुस्नाका वर्णन

हदीष शरीफमें आया है कि :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इर्शाद फरमाया कि :

"अल्लाह तआलाके अस्माए हुस्ना (सुंदर नाम) जिनके साथ दुआ माँगनेका हमैं हुक्म दिया गया है, निनानवे (९९) नाम हैं, जो व्यक्ति इनका इहातह कर लेगा (अर्थात् याद कर लेगा और पढता रहेगा) वह जन्नतमें प्रवेश करेगा ।"

(यही हदीष शरीफ इन शब्दोंमें भी मन्कूल है ।)

"जो कोई व्यक्ति इनको हिफज़ (याद) कर लेगा (और बराबर पढ़ता रहेगा) वह अवश्य जन्नतमें प्रवेश करेगा ।"

इस हदीष शरीफमें जिन निनानवे (९९) नामोंका उल्लेख हुवा है इनमें अधिकतर नाम कुर्आने करीममें मज़कूर हैं, मात्र कुछ नाम अैसे हैं जो हूबहू कुर्आने करीममें मज़कूर नहीं है, लेकिन ذُو انْتِقَامٍ कुर्आनमें आया है, जिसका अर्थ हूबहू वोही है जो مُنْتَقِمٌ के है । (बदला लेनेवाला) ।

वह निनानवे (९९) नाम पृष्ठ क्रमांक : ८ और ९ पर लिखे हैं ।

अस्माए हुस्नाका उल्लेख इस आयते करीमहमें है :

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا

(और अल्लाहके सबके सब ही नाम अच्छे (सुंदर) हैं, बस

संपादकोका निवेदन

- दुनियामें शायद ही कोई मानव अैसा होगा जिसे कोई न कोई परेशानी अथवा बीमारी न हो ।
- विविघ अस्माउल् हुस्नामें विविघ लाभ और गुण तथा परेशानीयोंके हल हैं, लेकिन अपनी परेशानी और बीमारीका हल कोनसे मुबारक अस्मामें हैं उसको तलाश करना आम व्यकितके बसकी बात नहीं है, इस लिअे अवाम इसके लाभसे महरूम (वंचित) हैं ।
- हमने विविघ परेशानीयाँ और बीमारीओंके विविघ प्रकरण बनाए हैं और हर प्रकरणमें उससे संबंघित परेशानीयाँ तथा बीमारीयाँ और उनके हल दर्ज कीअे हैं, ताकि लौग आसानीसे अपनी परेशानी और बीमारीका हल कोनसे मुबारक अस्मामें हैं उसको तत्काल तलाश करके उससे लाभ प्राप्त कर सके ।
- हमने इस किताबको संपादित करनेमें अघिकतर 'हिस्ने हसीन' (उर्दू भाषांतर) तथा 'वझाइफे अशरफिय्यह' (गुजराती)से लाभ उठाया हैं ।
- गुजरातीमें इस किताबको बेहद मक़बूलियत प्राप्त हूई है और इसके कई अेडिशन प्रकाशित हो चुके हैं ।
- अब उर्दू और हिन्दी अेडिशन पाठकोकी सेवामें प्रस्तृत है, अंग्रेझी भाषांतरका काम चालू है ।

अल्लाह तआला इससे लोगोंको लाभ पहूंचाअे और हमारी इस अदना कोशिश और प्रयासको क़बूल फरमाकर आख़िरतका ज़रीअह बनाअे ।आमीन ।

संपादक मंडल

अहादीषमें इस्मे आ'ज़म

(१) हदीष शरीफमें आया है :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने एक व्यक्तिको यह कहते हूए सुना : 'يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ'
(ऐ अज़मत व जलाल और एहसान व इकरामके मालिक)

तो आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने फरमाया :

''तेरी दुआ कुबूल की जाएगी, अब तू (जो चाहे) माँग ।''

(२) एक और हदीष शरीफमें आया है कि :

अल्लाह तआलाकी जानिबसे एक फरिश्ता नियुक्त है, जो व्यक्ति तीन मर्तबह : 'يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ'
(ऐ सब दया करनेवालोंसे अधिक दयालु)

कहता है वह फरिश्ता उस व्यक्तिसे कहता है :

''निशंक, सबसे महान दयालु तेरी ओर ध्यानित है, अब तू जो चाहे माँग ।''

(३) एक और हदीष शरीफमें आया है कि :

(एक मर्तबह) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम एक व्यक्तिके निकटसे गुज़रे जो :

'يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ' कह रहा था ।

आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने उससे फरमाया :

''तू (जो चाहे) माँग, अल्लाहकी कृपा दृष्टि तेरी ओर है ।''

इन नामोंसे उसको पुकारो)

यह सिर्फ निनानवे (९९) नामोंमें सिमित नहीं हैं, बल्कि इनके अलावह भी कुर्आन व हदीषमें नाम आए है, जैसे : 'غَافِرُ' इन नामोंमें मज़्कूर नहीं है, लेकिन कुर्आने करीममें आया है। इस लिए जो नाम भी कुर्आन व हदीषमें आए हैं वह सब इस आयते करीमहके मुताबिक़ हैं और इनसे दुआ करनी चाहीए। हाँ, अपनी तरफसे अल्लाहका कोई अैसा नाम जो कुर्आन व हदीषमें नहीं आया हो नामके तौर पर नहीं ले सकते, अगरचे अर्थके ए'तिबारसे दुरुस्त भी हो।

अस्माए हुस्नाके पढ़नेका तरीक़ा

हमने पृष्ठ क्रमाँक : ८, ९ पर जो नाम लिखे हैं, इन अस्माए हुस्नाकी तिलावत करना कोई चाहैं तो इस तरह शुरू करें :

- 'هُوَاللّٰهُ الَّذِیْ لَآاِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ' आखिर तक लगातार (मिला कर) पढ़ते चले जाऐं।
- हर नामके आखिरी हर्फ पर पेश पढ़े और दूसरे नामसे मिला दें।
- जिस नाम पर साँस लेनेके लिए रुकें उसको न मिलाऐं और दूसरा नाम 'اَلْ'से शुरू करें।
- अगर किसी एक नामका वज़ीफा पढ़े तो शुरूमें 'يَـــا' ('या') (हर्फे निदा) (संबोधन शब्द)की वृद्धि करें।

जैसे : 'اَلرَّحْمٰنُ' का वज़ीफा पढ़ना हो तो 'يَا رَحْمٰنُ' ('या रहमानु') पढ़े, 'يَـالرَّحْمٰنُ' ('यर्रहमानु) न पढ़े, इसी तरह सब अस्माअको समज़ लीजीए।

अस्माउल् हुस्नाकी मुसल्सल (श्रृंखलित) नामावली

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

السَّلَامُ	الْقُدُّوْسُ	الْمَلِكُ	الرَّحِيْمُ	الرَّحْمٰنُ
الْمُتَكَبِّرُ	الْجَبَّارُ	الْعَزِيْزُ	الْمُهَيْمِنُ	الْمُؤْمِنُ
الْقَهَّارُ	الْغَفَّارُ	الْمُصَوِّرُ	الْبَارِئُ	الْخَالِقُ
الْقَابِضُ	الْعَلِيْمُ	الْفَتَّاحُ	الرَّزَّاقُ	الْوَهَّابُ
الْمُذِلُّ	الْمُعِزُّ	الرَّافِعُ	الْخَافِضُ	الْبَاسِطُ
اللَّطِيْفُ	الْعَدْلُ	الْحَكَمُ	الْبَصِيْرُ	السَّمِيْعُ
الشَّكُوْرُ	الْغَفُوْرُ	الْعَظِيْمُ	الْحَلِيْمُ	الْخَبِيْرُ
الْحَسِيْبُ	الْمُقِيْتُ	الْحَفِيْظُ	الْكَبِيْرُ	الْعَلِيُّ
الْوَاسِعُ	الْمُجِيْبُ	الرَّقِيْبُ	الْكَرِيْمُ	الْجَلِيْلُ
الشَّهِيْدُ	الْبَاعِثُ	الْمَجِيْدُ	الْوَدُوْدُ	الْحَكِيْمُ

(४) एक और हदीष शरीफमें आया है कि :

जो व्यक्ति अल्लाह तआलासे तीन मर्तबह जन्नत माँगता है तो जन्नत कहती है :

''ऐ अल्लाह ! इस व्यक्तिको जन्नतमें दाखिल फरमा दे ।

और जो व्यक्ति अल्लाह तआलासे तीन मर्तबह जहन्नमसे पनाह माँगता है तो जहन्नम कहती है :

''ऐ अल्लाह ! तू उस शख्सको जहन्नमकी आगसे पनाह दे दे ।''

(५) एक और हदीष शरीफमें आया है कि :

जो व्यक्ति इन पाँच कलिमातके साथ दुआ करेगा, वह जो भी अल्लाह तआलासे माँगेगा, अल्लाह तआला उसकी दुआ अवश्य पूर्ण करेंगा ।

- 'لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ'
  अल्लाह तआलाके सिवा कोई मा'बूद (इबादतके लायक़) नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई हिस्सेदार नहीं है ।
- لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
  उसीका तमाम मुल्क है और उसीके लिए सब प्रशंसा है ।
- 'وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ'
  और वही हर चीज़ पर शक्तिमान है ।
- 'لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ' अल्लाहके सिवा कोई भी मा'बूद नहीं है ।
- 'وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ'
  और कोई भी शक्ति तथा कुव्वत उस (की मदद)के बगैर (प्राप्य) नहीं है ।

शीर्षक सूचि

१ शरीरके अंगोंकी परेशानियाँ

الْحَقُّ | الْوَكِيْلُ | الْقَوِىُّ | الْمَتِيْنُ | الْوَلِىُّ

الْحَمِيْدُ | الْمُحْصِىْ | الْمُبْدِئُ | الْمُعِيْدُ | الْمُحْيِىْ

الْمُمِيْتُ | الْحَىُّ | الْقَيُّوْمُ | الْوَاجِدُ | الْمَاجِدُ

الْوَاحِدُ | اَلاَحَدُ | الصَّمَدُ | الْقَادِرُ | الْمُقْتَدِرُ

الْمُقَدِّمُ | الْمُؤَخِّرُ | اَلْاَوَّلُ | اَلْاٰخِرُ | الظَّاهِرُ

الْبَاطِنُ | الْوَالِىْ | الْمُتَعَالِىْ | الْبَرُّ | التَّوَّابُ

الْمُنْتَقِمُ | الْعَفُوُّ | الرَّؤُوْفُ | مَالِكُ الْمُلْكِ

ذُوالْجَلَالِ | وَالْاِكْرَامِ | الْمُقْسِطُ | الْجَامِعُ | الْغَنِىُّ

الْمُغْنِىْ | الْمَانِعُ | الضَّارُّ | النَّافِعُ | النُّوْرُ

الْهَادِىْ | الْبَدِيْعُ | الْبَاقِىْ | الْوَارِثُ | الرَّشِيْدُ

الصَّبُوْرُ

५ आफत, बला, मुसीबत, मुश्किली, दुश्मन, अत्याचारी, बुरी (दुष्ट) व्यक्ति

६ घर और समाज

२ दिलसे संबंधित बाबतें

३ रूहसे संबंधित बाबतें

४ जादू, जिन्नात, बदनज़री, शयतान

प्रथम प्रकरण

शरीरके अंगोंकी परेशानियाँ

सर (मस्तक)

1 आधे सरके दर्दके लिए शिफाका अमल

- बीमारके सर पर उँगलीसे 'يَا جَبَّارُ' ७ (सात) मर्तबह लिखो।
- फिर बीमारका सर पकड कर 'يَا جَبَّارُ، يَا سَلَامُ' ('या जब्बारु', 'या सलामु') सात मर्तबह पढ़कर दम करो।
- यह अमल सूर्योदयसे पहेले करनेसे जल्द शिफा होगी। (इन्शाअल्लाह)

2 सरके दर्दसे शिफाका प्रथम अमल

अमल क्रमाँक : १ हर प्रकारके सर दर्दके लिए अकसीर है।

3 सरके दर्दसे शिफाका द्वितीय अमल

दाऐं हाथसे बीमार व्यक्तिका सर पकड कर 'يَا مُجِيبُ' ('या मुजीबु') ३ (तीन) मर्तबह पढ़कर दम करे। अगर दर्द ख़त्म न हो तो ५ (पाँच) मर्तबह, ७ (सात) मर्तबह, ९ (नव) मर्तबह, ११ (ग्यारह) मर्तबह पढ़कर दम करे। इन्शाअल्लाह शिफा नसीब होगी।

4 सरके दर्दसे शिफाका तीसरा अमल

'يَا مُحْيِي' ('या मुह्यी') हररोज़ सुब्ह—शाम १२० (एक सो बीस) मर्तबह पढ़कर बीमार व्यक्ति पर दम करनेसे इन्शाअल्लाह शिफा प्राप्त होगी।

७ रोज़ी, वेपार, कारोबार, नौकरी, कोर्ट और मुक़द्दमा

बीमारके सरके पास बैठ कर ३०० (तीन सो) मर्तबह 'يَـــا رَحْـمٰنُ'، 'يَـــا سَلَامُ' ('या रहमानु', 'या सलामु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह वह होशमें आ जाएगा।

11 बेहोशी दूर करनेका द्वितीय अमल

बीमारके सरके पास बैठ कर १०१ मर्तबह 'يَا شَهِيْدُ' ('या शहीदु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह बीमार होशमें आ जाएगा।

आँख

12 आँखकी कम रोशनी दूर करनेका अमल

४१ मर्तबह 'يَا شَكُوْرُ' ('या शकूरु') पढ़ कर पानी पर दम करके आँखमें लगानेसे और पीनेसे इन्शाअल्लाह शिफा होगी।

13 नाबीना होनेसे हिफाज़तका अमल

हररोज़ फजरकी नमाज़के बा'द १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَـــا سَلَامُ' ('या सलामु') पढ़नेवाला मरते दम तक इन्शाअल्लाह अंधा या लाचार नहीं होगा।

14 आँखके दर्दके लिए शिफाका अमल

- दोपहरको ज़वालके समय बावुजू ४१ (एकतालीस) मर्तबह 'يَـــا رَحْـمٰنُ' ('या रहमानु') पढ़ कर पानी पर दम करके सलाई तर करके बीमारकी आँखमें लगाए।
- हररोज़ ७ (सात) मर्तबह तर सलाई लगानेसे इन्शाअल्लाह शिफा प्राप्त होगी।

5 सरके दर्दसे शिफाका चौथा अमल

'يَا غَفُوْرُ' ('या गफ़ूरु') एक कागज़के टुकडे पर लिख कर रोटीके टुकडेमें रख कर खानेसे दर्द इन्शाअल्लाह खत्म हो जाएगा ।

नींद और सुस्ती

6 नींदका गल्बह दूर करनेका प्रथम अमल

'يَا مُقْتَدِرُ' ('या मुक़्तदिरु') हररोज़ ५०० (पाँच सो) मर्तबह पढ़नेसे नींद और गफलत इन्शाअल्लाह दूर हो जाएगी ।

7 नींदका गल्बह दूर करनेका द्वितीय अमल

'يَاقَيُّوْمُ' ('या क़य्यूमु') का विर्द करनेसे नींदका गल्बह इन्शाअल्लाह खत्म हो जाएगा ।

8 नींद कम आना और नींदमें डर लगना

सोनेसे पहेले 'يَامُتَكَبِّرُ' ('या मु–त–कब्बिरु') २१ (इक्कीस) मर्तबह पढ़ कर चुपचाप (खामोश) सोनेसे इन्शाअल्लाह नींद आ जाएगी और नींदमें डरनेसे हिफाज़त होगी ।

9 सुस्ती दूर करनेका अमल

'يَامُحْيِيُ' ('या मुह्यी')को हंमेशा पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह होशियार और ज़िन्दह दिल रहेगा और इबादतमें सुस्ती नहीं होगी ।

बेहोशी

10 बेहोशी दूर करनेका प्रथम अमल

ऊपर अमल क्रमाँक : १९ अनुसार अमल करे ।

कान

21 कानके दर्दके लिए शिफा का अमल

'يَـا سَـمِيْعُ' ('या समीउ') १००० मर्तबह पढ़ कर रूई पर दम करके कानमें डालनेसे इन्शाअल्लाह दर्द खत्म हो जाएगा ।

22 बेहरापनसे हिफाज़त का अमल

हर फर्ज़ नमाज़के बा'द हमेशा ११ मर्तबह 'يَـا سَمِيْعُ' ('या समीउ') पढ़नेसे पूरी उमर बेहरापनसे इन्शाअल्लाह हिफाज़त होगी ।

बवासीर

23 बवासीरसे हिफाज़त का अमल

'يَـا مَـلِكُ الْـقُـدُّوْسُ' ('या मलिकुल् कुद्दूस') फजर और मगरिबकी नमाज़के बा'द ११ (ग्यारह) मर्तबह पढ़नेसे इन्शाअल्लाह कभी भी बवासीर अथवा नासूर अथवा गुप्त रोग नहीं होंगे ।

24 खूनी बवासीरसे शिफाका प्रथम अमल

'يَـا عَلِىُّ' ('या अलिय्यु') १००० मर्तबह पढ़ कर पानी पर दम करके पीअे, इन्शाअल्लाह सात दिनोंमें शिफा प्राप्त होगी ।

25 खूनी बवासीरसे शिफाका द्वितीय अमल

- इस्लामी महीनेकी १३, १४ और १५ दीनांकके तीन रोज़ह रखे ।
- इफतारके समय १००० मर्तबह 'يَا مَجِيْدُ' पढ़ कर पानी पर दम

15 आँखका दर्द दूर करनेका अमल

७ मर्तबह 'يَا عَلِيُّ' ('या अलिय्यु') पढ़ कर, पानी पर दम करके आँखमें लगानेसे इन्शाअल्लाह तीन दिनोंमें शिफा प्राप्त होगी ।

16 आँखमें पानी आनेसे शिफाका अमल

- ११०० (ग्यारह सो) मर्तबह 'يَا بَصِيرُ' ('या बसीरु') हररोज़ पढ़े ।
- आरंभ और अंतमें यह दुरूद शरीफ पढ़े :

'اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِالسَّاجِدِيْنَ سَيِّدِ الرَّافِعِيْنَ سَيِّدِ الْكَامِلِيْنَ وَ عَلٰى آلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ'

- इस अमलसे इन्शाअल्लाह चंद ही दिनोंमें शिफा प्राप्त होगी ।

17 आँखमें पानी आनेसे हिफाज़तका अमल

ऊपर अमल क्रमाँक : १६ में बताया हुवा अमल हंमेशा करनेसे भविष्यमें पानी आनेसे इन्शाअल्लाह हिफाज़त होगी ।

18 आँखमें रोशनीका अमल

ऊपर अमल क्रमाँक : १६ अनुसार अमल करे ।

19 आँखोंकी रोशनी कम न हो उसका अमल

२१ (इक्कीस) दिन तक इशराक़की नमाज़के बा'द ५०० (पाँच सो) मर्तबह 'يَا ظَاهِرُ' ('या ज़ाहिरु') पढ़े तो इन्शाअल्लाह आँखोंकी रोशनी कम नहीं होगी ।

20 आँखोंकी कम रोशनी बढ़ानेका अमल

१२० मर्तबह 'يَا مُحْيِي' ('या मुह्यी') सुब्ह और शाम पढ़ कर सीना पर दम करनेसे इन्शाअल्लाह शिफा प्राप्त होगी ।

31 दिल (Heart) की बीमारियोंसे बचनेका अमल

- बहुत सुंदर, स्वच्छ और बडे अक्षरोंमें कागज़ पर 'اَللّٰهُ' लिखो ।
- हररोज़ दिन और रातमें कमसे कम ३ (तीन) मर्तबह बहुत ही शिस्तसे बावुजू क़िब्लह रुख एकांतमें बैठ कर इस नाम पर मुहब्बतकी निगाह डालो ।
- आँखें बंद करके कमसे कम १० (दस) मिनट तक दिलमें ख्याल करो कि यह नाम मेरे दिलमें लिखा है ।
- हररोज़ तीन मर्तबह यह अमल करे ।
- इन्शाअल्लाह पूरी उमर कभी भी खफक़ान, होले दिल, दिलकी घडकन, दिलकी बेचेनी आदि दिलकी कोई भी बीमारी नहीं होगी ।
- कोई भी ज़ालिम और अत्याचारीसे खौफ नहीं होगा और इश्के इलाही प्राप्त होगा ।

पेट

32 पेटके दर्दसे हिफाज़त का अमल

सात मर्तबह 'يَـا عَظِيـمُ' ('या अज़ीमु') पढ़ कर पानी पर दम करके पीओ तो इन्शाअल्लाह कभी पेटमें दर्द नहीं होगा ।

33 पेटके दर्दसे शिफा का अमल

करके पीअे । फिर हाथ उठा कर सात मर्तबह यह दुआ पढ़े :

'اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِکَ مِنَ الۡبَحۡرِ وَالۡجُذَامِ وَمِنۡ سَیِّءِ الۡاَسۡقَامِ'

इन्शाअल्लाह तीन दीनोंमें शिफा प्राप्त होगी ।

चमडी और खून

26 आतिशकके रोगसे शिफा का अमल

अमल क्रमाँक : २५ अनुसार अमल करे । इन्शाअल्लाह शिफा प्राप्त होगी ।

27 नापाक झख्मके लिए शिफा का अमल

अमल क्रमाँक : २५ अनुसार अमल करे । इन्शाअल्लाह शिफा प्राप्त होगी ।

28 फोडे, फुँसी और नासूरसे शिफाका अमल

सात दिन हररोज़ तक १०० मर्तबह 'یَا رَقِیۡبُ' पढ़ कर उस झख्म पर दम करनेसे इन्शाअल्लाह शिफा प्राप्त होगी ।

सीना

29 पसलीके दर्दसे शिफा का अमल

१००० (एक हज़ार) मर्तबह 'یَـا مَـجِیۡدُ' ('या मजीदु') पढ़ कर रूई पर दम करके दर्दकी जगह बांधनेसे इन्शाअल्लाह शिफा प्राप्त होगी ।

30 सीनेके दर्दसे शिफा का अमल

('या बर्रु') पढ़ कर उस पर दम करनेसे बालिग होने तक वह बालक तमाम आफतोंसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा ।

38 दूघ छुणाते समय बालकको होनेवाली तकलीफसे शिफा का अमल

कोई बालक माँका दूघ छोडनेकी तकलीफसे रोता हो तो कागज़ पर 7 मर्तबह 'يَا مَتِيْنُ' लिख कर पानीमें घोल कर बालकको पिलाए । इन्शाअल्लाह बालक चुप हो जाएगा और सब्र पकडेगा ।

39 बालककी विचारशक्ति और यादशक्तिमें वृद्धि करनेका अमल

- बालकको ४० दिन तक खाने–पीनेसे पहले २१ (इक्कीस) मर्तबह 'يَا عَلِيْمُ' ('या अलीमु') पढ़ कर पानी पर दम करके पिलाए ।
- बालककी विचारशक्ति और याद शक्ति इन्शाअल्लाह तेज़ हो जाएगी ।

40 कुर्आन मजीद जल्द याद होनेके लिए अमल

हर महीना तीन दिन 'يَـا وَاسِعُ' ('या वासिउ') १०० (एक सो) मर्तबह पढ़ कर पानी पर दम करके बालकको पिलाए तो कुर्आन मजीद बहुत जल्द याद हो जाएगा ।

41 बालककी ज़िद दूर करनेका अमल

सात मर्तबह 'يَـا مُقِيْتُ' पढ़ कर खाली ग्लासमें दम करे, फिर उसमें पानी भर कर बालकको पिलाए तो इन्शाअल्लाह सात

7 मर्तबह 'يَا عَظِيْمُ' कागज़ पर लिख कर घोल कर पीअे ।

पिस्तान (स्तन)

34 पिस्तानमें दूधमें वृद्धि करनेका अमल

'يَـا مَتِيْـنُ' ('या मतीनु')को ९० (नव्वे) मर्तबह कागज़ पर लिख कर पानीमें घोल कर पिलाए तो इन्शाअल्लाह दूधमें वृद्धि होगी । यह अमल ११ (ग्यारह) दिन तक मुसल्सल किया जाए ।

बालकोंकी बीमारियाँ

35 मसानकी बीमारीसे शिफाका प्रथम अमल

- आघा सेर (२५० ग्राम) सरसवका तेल लेकर बावुजू क़िब्लह रुख बैठ कर १००० ब ार 'يَا قَهَّارُ' ('या क़ह्हारु') पढ़ कर दम करे ।
- वह तेल सुब्ह और शाम २१ (इक्कीस) दिन तक बालकके शरीर पर मालिश करे ।

इन्शाअल्लाह बहुत जल्द तंदुरस्त होकर शक्तिशाली बन जाएगा ।

36 मसानकी बीमारीसे शिफाका द्वितीय अमल

- एक ताँबेकी तख्ती पर यह नक़्श लिख कर बालकके गलेमें पहना दे ।

يَا مُذِلَّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ، يَا مُذِلُّ يَا مُذِلُّ يَا مُذِلُّ

- हर महीने सात गैर आदमीयोंको खाना खिलाए ।

37 बालककी हिफाज़त का अमल

बालककी पैदाइशके बा'द तत्काल सात मर्तबह 'يَـا بَـرُّ'

● यह आ'माल करनेसे इन्शाअल्लाह फरज़ंद नेक बनेगा ।

बुखार

44 बुखार खत्म हो नेका अमल

कागज़ पर 'يَا غَفُوْرُ' ('या गफूरु') लिख कर ता'वीज़ बना कर बांधनेसे इन्शाअल्लाह बुखार अच्छा हो जाएगा ।

45 बुखार और दर्दे सर दूर करनेका अमल

'يَـا غَفُوْرُ' ('या गफूरु') एक कागज़के टुकडे पर लिख कर वह कागज़ रोटीके टुकडे पर रख कर वह टुकडा खाले । इन्शाअल्लाह तीन दिनमें बुखार और दर्दे सर अच्छा हो जाएगा ।

ताऊन (प्लेग) और वबाए आम

46 आँखकी कम रोशनी दूर करनेका अमल

जो व्यक्ति गुसल करके क़िब्लह रुख बैठ कर १११५ मर्तबह 'يَـا مُهَيْمِنُ' ('या मुहय्मिनु') तीन दिन तक पढ़ेगा वह ताऊन (प्लेग) और वबाए आमसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा ।

बीमारीसे शिफा

47 बीमारीसे शिफा का प्रथम अमल

दो रका'त तहिय्यतुल् वुज़ूकी नमाज़ पढ़ कर ३०० (तीन सो) मर्तबह २१ (इक्कीस) दिन तक 'يَا لَطِيْفُ' ('या लतीफु') पढ़े । इन्शाअल्लाह शिफा हो जाएगी ।

दिनके अमलसे बालकका रोना और ज़िद स्थगित हो जाएगा ।

42 बालककी सुरक्षा का प्रथम अमल

- गर्भकी शुरूआतसे बालकको दूध पिलाने तक मुसल्सल हररोज़ तीन मर्तबह यह अमल करते रहे :
- 'سَلَامٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبِّ الرَّحِيْمِ' रोटीके टुकडे पर लिख कर गर्भवती स्त्रीको पिलाए अथवा कागज़के टुकडे पर लिख कर पानी अथवा दवाईमें घोल कर पिलाए । अल्लाह तआलाके फज़्लसे नया पैदा शुदह बालक हर बीमारीसे सुरक्षित रहेगा ।

43 बालककी सुरक्षाका द्वितीय अमल

- ११ (ग्यारह) दिन तक इशाकी नमाज़के बा'द ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह 'يَا جَبَّارُ' ('या जब्बारु') पढ़ कर तीन बादामके मग्ज़ पर दम करके एक बादाम पत्नीको खिलाए और दो बादाम खूद खाए । फिर अपनी पत्नीसे संभोग करे ।
- ११ (ग्यारह) दिन तक इसी तरह करे, इन्शाअल्लाह अवश्य उसकी पत्नी गर्भवती हो जाएगी, और नेक फरज़ंद पैदा होगा ।
- लडकेका नाम 'अज़ीजुल्लाह' अथवा 'अताउल्लाह' रखे ।
- सात साल तक हर साल एक बक़रा अल्लाहके लिए ज़बह करके मात्र अल्लाहके लिए गरीबोंमें खाना पका कर खिलाए ।
- अगर इतनी शक्ति न हो तो कच्चा गोश्त तक़सीम कर दिया जाए ।
- अगर इतनी भी शक्ति न हो तो कुछ पैसा हर महीनाकी शुरूआतमें लडकेके हाथसे किसी नाबीना फक़ीरको दिला दे ।

53 बीमारीसे शिफाका सातवाँ अमल

बीमारके सरके क़रीब खडे होकर फजरकी सुन्नत और फर्ज़ नमाज़के दरमियान १२१ मर्तबह 'يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ' ('या अल्लाहु या रहमानु') पढ़ेगा तो वह इन्शाअल्लाह तंदुरस्त हो जाएगा ।

54 बीमारीसे शिफाका आठवाँ अमल

'يَا قَادِرُ' ('या क़ादिरु')को १०० (एक सो) मर्तबह हररोज़ पढ़े, इन्शाअल्लाह शिफा प्राप्त होगी ।

55 बीमारीसे शिफाका नवाँ अमल

'يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ' ('या ज़ल् जलालि वल् इकरामि')को १०० मर्तबह पढ़ कर पानी पर दम करके बीमार व्यक्तिको पिलाए, इन्शाअल्लाह तीन दिनमें शिफा प्राप्त होगी ।

56 बीमारीसे शिफाका दसवाँ अमल

'يَا كَبِيْرُ' ('या कबीरु')को हररोज़ ९० (नव्वे) मर्तबह पढ़नेसे इन्शाअल्लाह बहुत जल्द शिफा प्राप्त होगी ।

57 बीमारीसे शिफाका ग्यारहवाँ अमल

सात दिन तक १००० मर्तबह 'يَا حَفِيْظُ' पढ़ कर बीमार व्यक्ति पर दम करनेसे इन्शाअल्लाह बहुत जल्द शिफा प्राप्त होगी ।

58 बीमारीसे शिफाका बारहवाँ अमल

'يَا مُحْيِىُ' ('या मुह्यी')को अधिक मात्रामें विर्द करके

48 बीमारीसे शिफाका द्वितीय अमल

तंदुरस्त व्यक्ति हमेशाके लिए बीमार हो जाए तो २१ (इक्कीस) दिन तक 'يَا مُعِيْدُ' ('या मुईदु') पढ़े। इन्शाअल्लाह चंद दिनमें पहले जैसा ही तंदुरस्त हो जाएगा।

49 बीमारीसे शिफाका तीसरा अमल

३००० (तीन हज़ार) मर्तबह 'بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ يَا سَلَامُ' तीन दिन तक किसी बीमार व्यक्तिके लिए खत्म पढ़नेसे इन्शाअल्लाह जल्द शिफा प्राप्त होगी।

50 बीमारीसे शिफाका चौथा अमल

सर अथवा सीनेमें दर्द हो तो १२० (एक सो बीस) मर्तबह सुब्ह और शाम 'يَا مُحْيِىْ' ('या मुह्यी') पढ़ कर दम करे। इन्शाअल्लाह जल्द दर्द अच्छा हो जाएगा।

51 बीमारीसे शिफाका पाँचवाँ अमल

'يَا غَنِىُّ' ('या गनिय्यु') पढ़ कर पूरे शरीर पर दम करनेसे इन्शाअल्लाह बीमारीसे मुक्ति प्राप्त होगी।

52 बीमारीसे शिफाका छठा अमल

फजरकी नमाज़से पहले मकानके चार कोनोंमें १० (दस) मर्तबह 'يَا رَزَّاقُ' ('या रज़्ज़ाकु') पढ़ कर दम करनेसे इन्शाअल्लाह उस मकानमें कभी बीमारी और गरीबी नहीं आएगी। क़िब्लह रुख मुँह करके दाई जानिबसे शुरू करे।

एकांतमें २०० (दो सो) मर्तबह 'يَــا اَللّٰــهُ' ('या अल्लाहु') पढ़नेवालेकी तमाम परेशानीयाँ आसान हो जाएगी।
जिस बीमारके इलाजसे हकीम आजिज़ आ गए हों उस पर पढ़नेसे इन्शाअल्लाह वह अच्छा हो जाएगा।

64 असाध्य बीमारीसे शिफाका द्वितीय अमल

बीमार अधिक प्रमाणमें 'يَـا اَللّٰهُ' का विर्द करके शिफाकी दुआ माँगेगा तो इन्शाअल्लाह उसे संपूर्ण शिफा प्राप्त होगी।

65 असाध्य बीमारीसे शिफाका तीसरा अमल

बीमारके सर पर हाथ रख कर १३० बार उच्च आवाज़से 'يَا سَلَامُ' ('या सलामु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह शिफा प्राप्त होगी।

66 असाध्य बीमारीसे शिफाका चौथा अमल

हमेशा 'يَـــا سَلَامُ' ('या सलामु')का ज़िक्र करनेवाला इन्शाअल्लाह हर प्रकारकी आफतोंसे सुरक्षित रहेगा।

67 असाध्य बीमारीसे शिफाका पाँचवाँ अमल

असाध्य बीमारीके लिए यह मुबारक नाम पढ़ना मुजर्रब है :

'يَا حَلِيْمُ، يَا عَلِيْمُ، يَا عَلِيُّ، يَا عَظِيْمُ'

68 असाध्य बीमारीसे शिफाका छठा अमल

इशाकी नमाज़के बा'द सजदहकी स्थितिमें १०० (एक सो) मर्तबह 'يَـا اَرْحَـمَ الـرّٰحِمِيْنَ' ('या अरहमर्राहिमीन') पढ़ना असाध्य बीमारियोंकी दवा है।

बीमार व्यक्ति पर दम करनेसे इन्शाअल्लाह शिफा प्राप्त होगी ।

59 बीमारीसे शिफाका तेरहवाँ अमल

बीमार व्यक्ति 'يَـا حَيُّ' ('या हय्यु')को अधिक मात्रामें पढ़ेगा तो जल्द शिफा पाएगा ।

बीमार व्यक्तिके लिए ओर व्यक्ति पढ़े तो बीमार व्यक्तिकी आँखोंके साथ आँख मिलाकर पढ़े ।

60 बीमारीसे शिफाका चौदहवाँ अमल

चीनीकी प्लेट पर ज़ाफरानसे 'يَـا حَيُّ' लिख कर बीमार व्यक्तिको ४० दिन पिलाए ।इन्शाअल्लाह शिफा प्राप्त होगी ।

61 बीमारीसे शिफाका पंद्रहवाँ अमल

बेहोश व्यक्तिके सरके क़रीब बैठ कर ३०० (तीन सो) मर्तबह 'يَـا رَحْـمٰـنُ يَـا سَلَامُ' ('या रहमानु या सलामु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह बहुत ही जल्द वह होशमें आ जाएगा ।

62 बीमारीसे शिफाका सोलहवाँ अमल

हररोज़ ३१३ मर्तबह 'يَا اَللّٰهُ يَا سَلَامُ يَا قَوِيُّ' ('या अल्लाहु या सलामु या क़विय्यु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह शिफा प्राप्त होगी ।

63 असाध्य बीमारीका इलाज

असाध्य बीमारीसे शिफाका प्रथम अमल

जुम्अहके दिन जुम्अहकी नमाज़से पहले पाक–साफ होकर

नमकीन पानीको बिछ्छूके डँसनेकी जगह पर बार बार लगाए, इन्शाअल्लाह तत्काल ही तकलीफ दूर हो जाएगी ।

74 साँपके ज़हरसे शिफाका अमल

'يَا اَحَدُ' ('या अ–ह–दु')के साथ 'يَا وَاجِدُ' ('या वाजिदु') मिलाकर १०१ (एक सो) मर्तबह पढ़ कर साँप डँसी हूई व्यक्ति पर दम करे तो इन्शाअल्लाह साँपका ज़हर खत्म हो जाएगा ।

कमज़ोरी

75 रोज़हमें कमज़ोरी दूर करनेका अमल

रोज़हदारको कमज़ोरी आ जाए और शाम तक रोज़ह रखना मुश्किल हो जाए तो कोई खूश्बूदार फूल पर ७ (सात) मर्तबह 'يَا مُقِيتُ' ('या मुक़ीतु') पढ़ कर दम करे और वह फूल उसे सूंघाए । इन्शाअल्लाह रोज़हमें शक्ति पैदा होगी और बहुत ही आसानीसे रोज़ह खत्म होगा ।

रहमदानी, बच्चादानी (गर्भाशय)

76 गर्भ अवस्थामें करनेका अमल

अगर स्त्री गर्भ अवस्थामें वुजू करके हररोज़ ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह 'يَا مُتَعَالِي' ('या मुतआली') पढ़े तो इन्शाअल्लाह कभी उसका बच्चा फालिज़की बीमारीमें मुब्तला नहीं होगा । पढ़नेवाली स्त्री भी हर प्रकारकी आफतोंसे सलामत रहेगी ।

77 गर्भाशयकी बीमारीसे बच नेका अमल

बीमारीसे हिफाज़तके लिए

69 बीमारीसे हिफाज़तका प्रथम अमल

दो रका'त तहिय्यतुल् वुज़ूकी नमाज़ पढ़ कर ३०० (तीन सो) मर्तबह २१ (इक्कीस) दिन तक 'يَا لَطِيْفُ' ('या लतीफु') पढ़े। इन्शाअल्लाह बीमारीसे हिफाज़त होगी।

70 बीमारीसे हिफाज़तका द्वितीय अमल

हररोज़ ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह 'يَـا حَيُّ' ('या हय्यु') पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह कभी बीमार नहीं होगा।

71 बीमारीसे हिफाज़तका तीसरा अमल

'يَا مَاجِدُ' ('या माजिदु') १० (दस) मर्तबह पढ़ कर शरबत अथवा दवाई पर दम करके बीमारको पिलाए। सात दिनमें बीमार अल्लाह तआलाके फज़्लसे इन्शाअल्लाह तंदुरस्त हो जाएगा।

72 बीमारीसे हिफाज़तका चौथा अमल

'يَـا بَـدِيْـعُ' ('या बदीउ') १००० मर्तबह हररोज़ पढ़नेसे हर प्रकारकी बीमारी और हर प्रकारके गम इन्शाअल्लाह दूर हो जाऐंगे।

साँप, बिछ्छूके डँसनेका ज़हर

73 बिछ्छूके डँसनेसे शिफाका अमल

पानीमें थोडा नमक घोल कर ७० (सत्तर) मर्तबह 'يَـــا وَاسِـــعُ' ('या वासिउ') पढ़ कर उस पानी पर दम करे और उस

- वज़ीफाकी शुरूआतमें और खत्म पर निम्न लिखित मुबारक दुरूद शरीफ पढ़े :

'اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدَ النَّبِیِّ الْاُمِّ الْحَبِیْبِ الْاٰلِ الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ بِقَدْرِ عَظْمَتِہٖ ذَاتِکَ'

- हररोज़ यह वज़ीफा पूर्ण करनेके बा'द पानी पर दम करके पत्नीको पिलाए। इसी प्रकार ७ (सात) दिन तक करे।
- हररोज़ थोडी रूई लेकर उसे वज़ीफा पढ़े हूए पानीमें तर करके उसका ता'वीज़ पत्नीके गलेमें पहनाए।
- अल्लाह तआलाके फज़्लो करमसे थोडी ही मुद्दतमें गर्भ घारण होगा। और सहीह और सलामत तंदुरस्त बच्चा पैदा होगा।
- बच्चा पैदा होते ही उसी दिन वह ता'वीज़ माँके गलेसे निकाल कर बच्चेके गलेमें पहना दे। इन्शाअल्लाह बच्चेकी उम्रमें बरकत होगी।

81 गर्भ घारण करने और संतान होनेका चौथा अमल

'یَا وَاحِدُ الْاَحَدُ' ('या वाहिदुल् अ–ह–दु') लिख कर अपने पास रखे। इन्शाअल्लाह नेक संतान प्राप्त होगा।

82 गर्भ घारण करने और संतान होनेका पाँचवाँ अमल

संभोगकी शुरूआतमें 'یَا نَافِعُ' ('या नाफिउ') ४१ (एकतालीस) मर्तबह पढ़नेसे इन्शाअल्लाह नेक संतान पैदा होगा।

पति अपनी पत्नीके क़रीब जानेसे पहले ७० (सत्तर) मर्तबह 'يَـا مُغْنِى' ('या मुग्नी') पढ़ेगा तो वह कभी गर्भाशयकी बीमारीमें मुब्तला नहीं होगी ।

78 गर्भ घारण करने और संतान होनेका प्रथम अमल

- एक सेबका छिलका निकाल कर अथवा मुरगीके उबले हूए अंडेका छिलका निकाल कर सुफेद हिस्से पर ७ (सात) मर्तबह 'يَا مُبْدِئُ' ('या मुब्दिउ') लिख कर ३ (तीन) दिन तक सुब्हके समय पत्नीको खिलाए । इन्शाअल्लाह पहले ही महीनेमें गर्भघारण हो जाएगा ।
- पहले महीने नहीं हुवा तो दूसरे महीने भी इसी तरह करे ।
- फिर तीसरे महीनेमें भी इसी तरह करे, इन्शाअल्लाह तीन महीनेमें अवश्य गर्भ घारण होगा ।

79 गर्भ घारण करने और संतान होनेका द्वितीय अमल

७ दिन तक सेबके ७ टुकडे पर 'يَـا مُنْـعِمُ' ('या मुन्इमु') लिख कर पत्नीको खिलाए । इन्शाअल्लाह गर्भ घारण होगा ।

80 गर्भ घारण करने और संतान होनेका तीसरा अमल

- जिस स्त्रीको अपूर्ण गर्भपात हो जाता हो वह खूद अथवा उसका कोई रिश्तेदार ७ दिन तक अखंड हररोज़ ७००० (सात हज़ार) मर्तबह इशाकी नमाज़के बा'द 'يَا خَالِقُ' ('या खालिकु') पढ़े ।

‘يَــــا اَوَّلُ’ (‘या अव्वलु’) पढ़े और पानी अथवा शरबत पर दम करके आधा खूद पीऐ और आधा अपनी पत्नीको पिलाए तो इन्शाअल्लाह नेक फरज़ंद पैदा होगा ।

88 लडका (पुत्र) पैदा होनेका चौथा अमल

स्त्री मुसल्सल ७ रोज़ह रखे और पानीसे इफतार करे और इफतारके बा’द २१ (इक्कीस) मर्तबह ‘اَلْبَــارِئُ الْـمُـصَوِّرُ’ (‘अल् बारिउल् मुसव्विरु’) पढ़े ।इन्शाअल्लाह उसे लडका पैदा होगा ।

89 लडका (पुत्र) पैदा होनेका पाँचवाँ अमल

स्त्री ७ (सात) रोज़ह रखे और रोज़ह इफतार करनेके बा’द ‘يَــا مُصَوِّرُ’ (‘या मुसव्विरु’) २१ मर्तबह पढ कर पानी पर दम करे और उससे रोज़ह इफतार करे, इन्शाअल्लाह नेक फरज़ंद पैदा होगा ।

90 गर्भ अवस्थामें आसानीके लिए अमल

गर्भवती स्त्री १ २१ (एक सो इक्कीस) मर्तबह ‘يَــــا قَـوِىُّ’ (‘या क़विय्यु’) पढ़े तो इन्शाअल्लाह गर्भके दिन बहुत ही आसानीके साथ गुज़रेंगे और तंदुरस्ती और शक्ति बरक़रार रहेगी ।

91 गर्भपातसे हिफाज़तका प्रथम अमल

स्त्रीने अपनी पेट पर हाथ रख कर ७ (सात) मर्तबह ‘يَــــا رَقِيْبُ’ (‘या रक़ीबु’) पढ़े ।इन्शाअल्लाह गर्भपात नहीं होगा ।

92 गर्भपातसे हिफाज़तका द्वितीय अमल

पति ‘يَــــا مُبْـدِئُ’ ९० मर्तबह पढ़ कर गर्भवतीके पेट पर

83 नेक संतान होनेका प्रथम अमल

पत्नी गर्भ घारण करे उस दिनसे बच्चा पैदा हो वहां तक हररोज़ ४१ (एकतालीस) मर्तबह 'يَا قُدُّوْسُ' ('या कुद्दूसु') पढ़ कर पानी अथवा दवाई पर दम करके गर्भवती स्त्रीको पिलाए । इन्शाअल्लाह नेक संतान पैदा होगा ।

84 नेक संतान होनेका द्वितीय अमल

पत्नीसे संभोग करनेसे पहले १० (दस) मर्तबह 'يَا مُتَكَبِّرُ' ('या मुतकब्बिरु') पढ़े । इन्शाअल्लाह नेक संतान पैदा होगा ।

85 लडका (पुत्र) पैदा होनेका प्रथम अमल

पति अथवा अन्य कोई स्त्री उसके पेट पर उँगलीसे ७० (सत्तर) मर्तबह दाइरह करके हर मर्तबह 'يَـــا مَتِيْـنُ' ('या मतीनु') पढ़े, इन्शाअल्लाह लडका पैदा होगा ।

86 लडका (पुत्र) पैदा होनेका द्वितीय अमल

रमज़ानुल् मुबारककी पहली जुम्अहमें जुम्अहकी नमाज़के बा'द 'يَـــا وَاحِـدُ' ('या वाहिदु')को १०१ (एक सो एक) मर्तबह कागज़ पर लिख कर उसे ता'वीज़के तौर पर अपनी दाई जानिब बाजू पर बांधे । इन्शाअल्लाह उसी साल नेक फरज़ंद पैदा होगा । अत्यंत मुजर्रब (अनुभूत) अमल है ।

87 लडका (पुत्र) पैदा होनेका तीसरा अमल

पति ४० (चालीस) दिन तक हररोज़ ४० (चालीस) मर्तबह

दम करके बालकको पिलाए तो इन्शाअल्लाह बालककी समजशक्ति और यादशक्ति बलवान हो जाएगी।

97 यादशक्ति बलवान करनेका द्वितीय अमल

- तीन बादाम पर 'يَا ذَالْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ' ('या जल् जलालि वल् इकराम') पढ़ कर दम करे।
- एक बादाम सुब्हको, एक दोपहरको और एक रातको सोते समय खाए।
- २१ (इक्कीस) दिन यह अमल करनेसे इन्शाअल्लाह दिमाग और यादशक्ति बलवान हो जाएगी।

98 यादशक्ति बलवान करनेका तीसरा अमल

'يَا عَلِيمُ' ('या अलीमु') अधिक मात्रामें पढ़नेसे अल्लाह तआला अपनी इल्म और मअरिफतके दरवाज़े खोल देगा और पढ़नेवालेकी यादशक्ति इन्शाअल्लाह बलवान होगी।

99 दिलसे संदेह और वहम दूर करनेका अमल

हररोज़ १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَا اَللّٰهُ' ('या अल्लाहु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दिलसे हर प्रकारके संदेइ और वहम दूर हो जाऐंगे, यक़ीन मज़बूत बनेगा।

100 गुस्सा दूर करनेका अमल

- जो व्यक्ति १० मर्तबह दुरूद शरीफ और १० (दस) मर्तबह 'يَا رَؤُوْفُ' ('या रऊफु') पढ़ेगा उसका गुस्सा दूर हो जाएगा।
- गज़बनाक (क्रोधी) व्यक्तिके सामने ऊपर बताया हुवा अमल

दाइरह (वर्तुल) बनानेकी तरह उँगली फेरे । इस अमलको ७ दिन तक मुसल्सल करता रहे । इन्शाअल्लाह गर्भपात नहीं होगा ।

93 गर्भपातसे हिफाज़तका तीसरा अमल

सुब्ह सवेरे गर्भवती स्त्रीके पेट पर हाथ रख कर ९९ (निनानवे) मर्तबह **'يَا مُبْدِئُ'** ('या मुब्दिउ') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह न गर्भपात होगा और न विलादतके समयसे पहले बच्चा पैदा होगा ।

94 विलादत (प्रसूति)में आसानीके लिए अमल

जिस गर्भवती स्त्रीको {विलादत (प्रसूति)के दिन होनेके उपरांत} बच्चा पैदा न होता हो और बुहत दर्द होता हो तो १२० (एक सो बीस) मर्तबह **'يَا اَللّٰهُ'** ('या अल्लाहु') पढ़ कर गुड अथवा खमीरह आदि पर दम करके तीन हिस्सा करके खिलाया जाए तो तत्काल अल्लाह तआलाके फज़्लसे मुश्किल आसान हो जाएगी। यह मुजर्रब (अनुभूत) अमल है ।

यादशक्ति बढ़ानेके लिए

95 भूली हूई चीज़ याद आनेके लिए अमल

'يَا مُعِيْدُ' ('या मुईदु') अघिक मात्रामें पढ़नेसे भूली हूई बात इन्शाअल्लाह याद आ जाएगी ।

96 यादशक्ति बलवान करनेका प्रथम अमल

४० (चालीस) दिन तक सुब्ह सवेरेमें खाने–पीनेसे पहले २१ (इक्कीस) मर्तबह **'يَا عَلِيْمُ'** ('या अलीमु') पढ़ कर पानी पर

तीन दिन रोटीके टुकडे पर तीन मर्तबह 'يَــا غَـفُـوْرُ' ('या गफूरु') लिख कर खाए । इन्शाअल्लाह तमाम गम दूर हो जाएगा ।

105 दिलकी गफलत दूर करनेका प्रथम अमल

'يَـا رَحْـمٰـنُ يَا رَحِيْمُ' ('या रहमानु या रहीमु') दोनों अस्मा मिलाकर हर नमाज़के बा'द २१ मर्तबह पढ़नेसे इन्शाअल्लाह गफलत दूर हो जाएगी और नमाज़की मुहब्बत पैदा होगी ।

106 दिलकी गफलत दूर करनेका द्वितीय अमल

जुम्अहके दिन सूर्योदयके एक घंटेके बा'द ३००० मर्तबह 'يَـا قَـوِىُّ' ('या क़विय्यु') पढ़नेसे दिली गफलत इन्शाअल्लाह दूर होगी । सात जुम्अह तक यह अमल बराबर चालु रखे ।

107 दिलमें नेक तव्फ़ीक़ पैदा हो नेका अमल

जुम्अहकी नमाज़के बा'द १०० (एक सो) मर्तबह 'يَــــا بَـــصِـيْــرُ' ('या बसीरु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दिलकी सफाई होगी और अच्छे काम करनेकी तव्फ़ीक़ होगी ।

108 दिलसे रिया (दंभ) दूर करनेका अमल

- 'يَا شَهِيْدُ' ('या शहीदु')का अर्थ दिमागमें रख कर १००० (एक हज़ार) मर्तबह पढ़े ।
- २१ (इक्कीस) दिन तक यह अमल करे ।

इन्शाअल्लाह दिलसे रिया (दंभ) दूर हो जाएगी ।

109 दिलसे बुराई दूर करनेका अमल

करनेसे इन्शाअल्लाह उसका गुस्सा भी दूर हो जाएगा ।

101 सुस्ती दूर होने और दिमागी ताज़गीके लिए अमल

फजरकी नमाज़के बा'दसे सूर्योदय तक 'يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ' ('या हय्यु या क़य्यूमु')का विर्द करनेसे इन्शाअल्लाह तबीअतमें ताज़गी आएगी और सुस्ती दूर हो जाएगी ।

द्वितीय प्रकरण

दिलसे संबंधित बाबतें

दिलकी सफाई (तज़्कियह)

102 दिलकी सफाईके लिए प्रथम अमल

दो रका'त नफल नमाज़ अदा करके एकांतमें दिली निखालसता और परिपूर्ण घ्यानके साथ 'يَا مُهَيْمِنُ' ('या मुहय्मिनु')का १०० (एक सो) मर्तबह ज़िक्र करे, इन्शाअल्लाह ज़ाहिर और बातिन, बैरूनी और अंदरूनी सफाई हो जाएगी और अल्लाह तआलाके भेद (रहस्य) प्रगट हो जाऐंगे ।

103 दिलकी सफाईके लिए द्वितीय अमल

७ दिन तक ज़वाल (सूरज ढ़लने)के समय १३० मर्तबह 'يَا مَلِكُ' पढ़े । इन्शाअल्लाह दिलकी सफाई और बेपरवाई होगी ।

104 दिलका गम दूर करनेका अमल

दिलसे इन्शाअल्लाह दुनियाकी मुहब्बत और डर चला जाएगा ।

115 दिलसे सख्ती दूर करनेका अमल

हररोज़ हर नमाज़के बा'द १०० मर्तबह 'يَا رَحْمٰنُ' का ज़िक्र करनेवालेके दिलसे सख्ती और गफलत इन्शाअल्लाह दूर होगी ।

116 दिलसे वासना दूर करनेका अमल

- फजरकी नमाज़के बा'द सर पर हाथ रख कर १०० (एक सो) मर्तबह 'يَا غَنِيُّ' ('या गनिय्यु') पढ़ो ।
- इसके बा'द १०० मर्तबह दिल पर हाथ रख कर 'يَا غَنِيُّ' पढ़ो ।
- ११ (ग्यारह) दिनके अमलसे इन्शाअल्लाह नफसानी वासना दूर हो जाएगी ।

117 दिलसे नफसानी वासना दूर करनेका अमल

'يَا خَبِيْرُ' ('या खबीरु') अधिक मात्रामें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह यह बुराई दूर हो जाएगी ।

118 दिलसे शयतानी वसवसे दूर करनेका अमल

'يَـــا مُقِيْتُ' ('या मुक़ीतु') हररोज़ १००० मर्तबह पढ़नेसे ४० दिनके अंदर इन्शाअल्लाह वसवसोंका आना कम हो जाएगा ।

119 दिलसे शयतानी वसवसे दूर करनेका अमल

'يَا مُقْسِطُ' ('या मुक़सितु') हररोज़ पढ़नेसे शयतानी वसवसे

'يَا مَانِعُ' ('या मानिउ') अधिक मात्रामें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दिलकी बुराई दूर हो जाएगी ।

110 दिलसे गफलत दूर करनेका अमल

सूर्योदयके बा'द 'يَا مُقْتَدِرُ' ('या मुक़तदिरु') अधिक मात्रामें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दिलकी गफलत दूर हो जाएगी ।

111 दिलसे दुनियाकी मुहब्बत दूर करनेका अमल

'يَـــا قَهَّـــارُ' ('या क़ह्हारु')को अधिक मात्रामें विर्द रखनेसे इन्शाअल्लाह दिलसे दुनियाकी मुहब्बत दूर हो जाएगी और अल्लाह तआलाकी मुहब्बत पैदा हो जाएगी ।

112 दिलसे गुनाहकी रगबत दूर करनेका अमल

हररोज़ सात मर्तबह 'يَا بَرُّ' ('या बर्रु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दिलसे गुनाहोंकी रगबत दूर हो जाएगी ।

113 दिलसे दुनियाकी मुहब्बत दूर करनेका अमल

'يَـــا بَـــرُّ' ('या बर्रु') अधिक मात्रामें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दुनियाकी मुहब्बत दूर हो जाएगी ।

114 दिलसे दुनियाकी मुहब्बत दूर करनेका अमल

'يَـا وَاحِـدُ الْاَحَـدُ' को हररोज़ १००० मर्तबह पढ़नेवालेके

125 दिलमें नूर पैदा करनेका पाँचवाँ अमल

खाते समय 'يَا وَاجِدُ' ('या वाजिदु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दिलमें नूर पैदा होगा।

126 दिलमें नूर पैदा करनेका छठा अमल

'يَـا مَـاجِدُ' हाल (बेखूदी) प्रचलित होने तक पढ़नेसे दिल अल्लाह तआलाके अनवारसे इन्शाअल्लाह नूरानी बनेगा।

127 दिलमें नूर पैदा करनेका सातवाँ अमल

इशराक़की नमाज़के बा'द ५०० मर्तबह 'يَا ظَاهِرُ' पढ़नेसे इन्शाअल्लाह आँखोंकी रोशनी और दिलमें नूर पैदा होगा।

128 दिलमें नूर पैदा करनेका आठवाँ अमल

जुम्अहकी रातको ७ (सात) मर्तबह सूरए 'नूर' और १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَـــا نُــوْرُ' ('या नूरु') पढ़नेसे दिल अल्लाह तआलाके अनवारसे इन्शाअल्लाह नूरानी होगा।

129 दिलमें नूर पैदा करनेका नवाँ अमल

- 'يَـــا خَـالِقُ' ('या खालिकु') सुब्ह और शाम असंख्य मर्तबह पढ़नेवालेके लिए अल्लाह तआला एक फरिश्ता पैदा करेगा।
- वह फरिश्ता क़ियामत तक जो कुछ इबादत करेगा वह इबादत उस व्यक्तिके आ'मालनामहमें लिखी जाएगी।
- उस व्यक्तिका दिल और चहेरा नूरानी बनेगा और अच्छे कामोंमें दिल मज़बूत रहेगा।

इन्शाअल्लाह दूर होंगे ।

120 दिलसे संदेह और वहम दूर करनेका अमल

हररोज़ १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَـــا اَلـلّٰـــهُ' ('या अल्लाहु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दिलसे हर प्रकारके संदेह और वहम दूर होंगे, और यक़ीन मज़बूत होगा ।

दिलमें सदगुण पैदा करनेके लिए

121 दिलमें नूर पैदा करनेका प्रथम अमल

हररोज़ मुसल्सल ज़वालके समय 'يَـــــا مَـــلِكُ' ('या मलिकु') पढ़नेवालेका दिल इन्शाअल्लाह नूरानी बनेगा ।

122 दिलमें नूर पैदा करनेका द्वितीय अमल

आधी रातको 'يَـا خَـالِقُ' ('या खालिकु') वज़ीफा पढ़नेसे अल्लाह तआला दिलको ईमानके नूरसे नूरानी फरमाएगा ।

123 दिलमें नूर पैदा करनेका तीसरा अमल

फजरकी नमाज़के बा'द दोनों हाथ सीना पर रख कर 'يَـــا فَتَّـــــاحُ' ('या फत्ताहु') ७० (सत्तर) मर्तबह पढ़नेवालेका दिल इन्शाअल्लाह हिदायत और ईमानके नूरसे नूरानी बनेगा ।

124 दिलमें नूर पैदा करनेका चौथा अमल

जुम्अहकी नमाज़के बा'द १०० (एक सो) मर्तबह 'يَا بَصِيْرُ' ('या बसीरु') पढ़नेसे अल्लाह तआला आँखमें रोशनी और दिलमें नूर पैदा फरमाएगा ।

(एकतालीस) दिन तक ४१ (एकतालीस) मर्तबह 'يَـا مُؤَخِّـرُ' ('या मुअख्खिरु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह नफस ता'बेदार बन जाएगा ।

135 कश्फ व ईमानके दरवाज़े खोलनेका अमल

फजरकी नमाज़के बा'द 'يَـا عَـلِيْـمُ' ('या अलीमु') १०० मर्तबह पढ़नेसे अल्लाह कश्फ और ईमानके दरवाज़े खोल देगा ।

136 इल्म और मअरिफतके दरवाज़े खोलनेका अमल

'يَـا عَـلِيْـمُ' ('या अलीमु') अधिक मात्रामें पढ़नेसे अल्लाह तआला अपने इल्म और मअरिफतके दरवाज़े इन्शाअल्लाह खोल देगा और पढ़नेवालेकी यादशक्ति बलवान होगी ।

137 इल्म व हिकमत प्राप्त होनेका प्रथम अमल

'يَـا عَـلِيْـمُ' ('या अलीमु') अधिक मात्रामें पढ़नेवालेके लिए इन्शाअल्लाह इल्म और हिकमतके दरवाज़े खूल जाऐंगे ।

138 इल्म व हिकमत प्राप्त होनेका द्वितीय अमल

हररोज़ रातको सोते समय सीना पर हाथ रख कर १०० (एक सो) मर्तबह 'يَـا بَـاعِـثُ' ('या बाइसु') पढ़नेवालेका दिल इन्शाअल्लाह इल्म और हिकमतसे जीवंत हो जाएगा ।

139 दिलमें अल्लाह तआलाके भेद प्राप्त होनेके लिए अमल

130 दिलमें नूर पैदा करनेका दसवाँ अमल

रातको सोते समय अपने सीना पर हाथ रख कर १०० (एक सो) मर्तबह 'يَا بَاعِثُ' ('या बाइसु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दिल नूरानी हो जाएगा ।

131 नफसको अल्लाह तआलाका ता'बेदार बनानेका प्रथम अमल

हमेशा 'يَا مُقَدِّمُ' ('या मुक़द्दिमु')का विर्द करनेवाला इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआलाका ता'बेदार बन जाएगा ।

132 नफसको अल्लाह तआलाका ता'बेदार बनानेका द्वितीय अमल

सोते समय सीना पर हाथ रख कर 'يَا مُمِيْتُ' ('या मुमीतु') पढ़ते पढ़ते सोनेसे इन्शाअल्लाह नफस अल्लाह तआलाका ता'बेदार बन जाएगा ।

133 नफसको अल्लाह तआलाका ता'बेदार बनानेका तीसरा अमल

हररोज़ १०० (एक सो) मर्तबह 'يَا مُقَدِّمُ' वज़ीफा पढ़नेवालेका नफस इन्शाअल्लाह, अल्लाहकी ता'बेदारीमें रहेगा ।

134 नफसको अल्लाह तआलाका ता'बेदार बनानेका चौथा अमल

फजरकी सुन्नतके बा'द फर्ज़ नमाज़से पहले ४१

पढ़नेसे इन्शाअल्लाह नेक आ'मालकी तव्फ़ीक़ नसीब होगी ।

145 दिलमें इबादतका शोख पैदा होनेके लिए चौथा अमल

जुम्अहकी नमाज़के बा'द रोटी पर 'سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّنَا وَ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحُ' ('सुब्बूहुन् कुद्दूसुन् रब्बुना व रब्बुल् मलाइ–कति वर्रूह') लिख कर खाए तो इन्शाअल्लाह दिलमें इबादतका शोख पैदा होगा और अल्लाह तआला उसे आफतोंसे सुरक्षित रखेगा ।

146 दिलमें इबादतका शोख पैदा होनेके लिए पाँचवाँ अमल

अगर कोई पहले आबिद, झाहिद था, अब इबादत छूट गई और वह चाहता है कि उसकी पहले जैसी हालत हो जाए तो २१ (इक्कीस) दिन तक 'يَا مُعِيدُ' ('या मुईदु') पढ़े । इन्शाअल्लाह चंद दिनमें पहले जैसी हालत क़ाइम हो जाएगी ।

147 दिलको ज़ाकिर बना नेका अमल

जो व्यक्ति 'يَا مُؤَخِّرُ' ('या मुअख्खिरु') हररोज़ १००० (एक हज़ार) मर्तबह पढ़ेगा उसमें वलियों जैसे गुण पैदा होंगे । अल्लाह तआलाकी यादके बगैर उसके दिलको इन्शाअल्लाह सुकून प्राप्त नहीं होगा ।

148 दिलको मज़बूत बना नेका अमल

जो व्यक्ति हमेशा पाँच समयकी नमाज़के बा'द १००

रातके अंतिम भागमें बावुजू ९९ (निनानवे) मर्तबह 'يَــا حَـكَـمُ' ('या ह–क–मु') पढ़नेवालेका दिल इन्शाअल्लाह अल्लाह तआलाके भेदकी दौलतसे मालामाल होगा ।

140 दिलमें इश्क़े इलाही पैदा हो नेका अमल

'يَــا اَللّٰـهُ' ('या अल्लाहु') मुसल्सल पढ़नेवालेके दिलमें इन्शाअल्लाह इश्क़े इलाही पैदा होगा ।

141 दिलमें खुलूस पैदा होनेके लिए अमल

सोते, उठते २० (बीस) मर्तबह 'يَا مُقْتَدِرُ' ('या मुक़तदिरु') पढ़नेवालेके तमाम कामोंमें इन्शाअल्लाह खुलूस पैदा होगा ।

142 दिलमें हिदायत प्राप्त हो नेका प्रथम अमल

'يَــا هَــادِىُ' ('या हादी')का विर्द करनेसे इन्शाअल्लाह हिदायत नसीब होगी ।

143 दिलमें हिदायत प्राप्त होनेका द्वितीय अमल

फजर और इशाकी नमाज़के बा'द दुआके लिए हाथ उठा कर ७ (सात) मर्तबह 'يَــا هَــادِىُ' ('या हादी') कहे, इसके बा'द हाथ मुंह पर फेर ले । इन्शाअल्लाह हर काममें अक़ल सीधे मार्ग पर और इरादह सहीह और दुरुस्त रहेगा ।

144 दिलमें नेक आ'मालकी तव्फीक़ होनेका तीसरा अमल

जुम्अहकी रातको 'يَــا وَلِىُّ' ('या वलिय्यु') १००० मर्तबह

153 बेनियाज़ी प्राप्त होनेका प्रथम अमल

फजरकी नमाज़के बा'द १२० मर्तबह 'يَـا مَـلِكُ' पढ़नेसे अल्लाह तआला बेनियाज़ी अर्पण करेगा और घनवान बनाएगा ।

154 बेनियाज़ी प्राप्त होनेका द्वितीय अमल

अधिक मात्रामें 'يَا وَاسِعُ' ('या वासिउ')का विर्द रखनेवालेको इन्शाअल्लाह ज़ाहिरी व बातिनी बेनियाज़ी प्राप्त होगी ।

155 बेनियाज़ी प्राप्त होनेका तीसरा अमल

सुब्ह सवेरे सजदहमें सर जुका कर 'يَـــا صَـــمَــدُ' ('या स–मदु') ११५ (एक सो पंद्रह) मर्तबह अथवा १२५ (एक सो पच्चीस) मर्तबह पढ़नेवालेको इन्शाअल्लाह ज़ाहिरी और बातिनी सच्चाई और बेनियाज़ी प्राप्त होगी ।

156 बेनियाज़ी प्राप्त होनेका चौथा अमल

बावुज़ू 'يَـا صَـمَـدُ' ('या स–मदु') बार बार पढ़नेवालेको इन्शाअल्लाह मख़्लूक़से बेनियाज़ी प्राप्त होगी ।

157 बेनियाज़ी प्राप्त होनेका पाँचवाँ अमल

'يَـا مَـالِكُ الْـمُلْكِ' ('या मालिकुल् मुल्कि')को हमेशा पढ़नेवालेको अल्लाह तआला लोगोंसे बेनियाज़ बना देगा ।

158 बेनियाज़ी प्राप्त होनेका छठा अमल

● जो व्यक्ति दिनमें ११ (ग्यारह) बजे बावुज़ू क़िब्लह रुख खडे हो

(एक सो) मर्तबह 'يَـا جَبَّارُ' ('या जब्बारु') पढ़ेगा तो लोग उसकी गीबत करे अथवा उसको बुरा,भला कहें उससे नाराज़ नहीं होगा। उसका दिल इन्शाअल्लाह मज़बूत और साबिर हो जाएगा। किसी मुसीबतसे हालत खराब नहीं होगी। जवां मर्दी और नेकीकी तरफ उसका दिल माइल होगा।

149 दिलमें नरमी और शफक़त पैदा करनेका अमल

जो व्यक्ति हररोज़ १०० मर्तबह 'يَـا رَحِيْمُ' ('या रहीमु') पढ़े तो उसके दिलमें नरमी और शफक़त इन्शाअल्लाह पैदा होगी।

150 दिल खूश रहनेके लिए अमल

हररोज़ ३०० (तीन सो) मर्तबह 'يَـا قَيُّوْمُ' ('या क़य्यूमु') पढ़नेवालेका दिल इन्शाअल्लाह हमेशा खूश रहेगा।

151 दिलमें सब्र और सुकून पैदा होनेका अमल

'يَـا صَبُـوْرُ' ('या सबूरु') १३५ मर्तबह पढ़ कर जनाबे इलाहीमें दुआ करे तो इन्शाअल्लाह सब्र और सुकून प्राप्त होगा।

152 शरीअतके विरोघीओसे नफरत पैदा होनेका अमल

जो व्यक्ति 'يَا ضَارُّ' ('या ज़ारुं') अघिक मात्रामें पढ़ेगा वह अल्लाह तआलाकी दुश्मनोंसे दुश्मनी अघिक रखेगा। शरीअतके विरोघीओंसे कभी खूश न होगा। फारूक़ी गुण इन्शाअल्लाह उसमें अघिक प्रमाणमें होंगे।

163 दिलसे रंज और गम दूर करनेका तीसरा अमल

जिस व्यक्तिको ज़ियादह गम हो वह 'يَـا ذَاالْـجَلَالِ وَالْإِكْـرَامِ' ५०० मर्तबह पढ़ कर जनाबे इलाहीमें दुआ करे । इन्शाअल्लाह सब्र और सुकून प्राप्त होगा ।

164 दिलसे रंज और गम दूर करनेका चौथा अमल

जो व्यक्ति रंज और गममें मुब्तला हो वह ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह 'يَا مُقْسِطُ' ('या मुक़सितु') पढ़े ।अल्लाह तआलाके फज़्लो करमसे इन्शाअल्लाह गम दूर होगा और खूशी प्राप्त होगी ।

165 दिलसे रंज और गम दूर करनेका पाँचवाँ अमल

अगर किसीके रिश्तेदारका इन्तिक़ाल हो गया हो और उसकी जुदाईमें बेचेन हो तो १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَـا صَبُـوْرُ' ('या सबूरु') पढ़ कर पानी पर दम करके पानी पिलाए । उसके दिलको इन्शाअल्लाह सब्र प्राप्त होगा ।सात दिन मुसल्सल यह अमल करे ।अल्लाह तआला उसके गमको भुला देगा ।

166 दिलसे तमाम गम दूर करनेका अमल

जुम्अहकी रातको १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَـا بَـاقِـىْ' ('या बाक़ी') पढ़नेवालेके इन्शाअल्लाह तमाम गम दूर हो जाऐंगे ।

कर सजदहकी यह आयत पढ़े : 'وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ'

● फिर सजदहमें जा कर 'يَا وَهَّابُ' ('या वह्हाबु') पढ़े,

तो तमाम मख्लूक़से वह व्यक्ति इन्शाअल्लाह बेपरवाह रहेगी ।

दिलकी रक्षा

159 दिलकी बातिनी बीमारीओंसे रक्षाका अमल

ज़वालके समय 'يَـــــا قُـــدُّوْسُ' ('या कुद्दूसु') हमेशा पढ़नेवालेका दिल रिया, लालच, बेखूदी और दुश्मनी आदि बातिनी बीमारीओंसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा ।

160 नफस व शयतानसे दिलकी रक्षाका अमल

'يَا تَوَّابُ' को ७०० मर्तबह हररोज़ पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह कभी भी नफस और शयतानकी जालमें नहीं फंसेगा ।

दिलके रंज और गम

161 दिलसे रंज व गम दूर करनेका प्रथम अमल

'يَا غَفُوْرُ' ('या गफूरु') अधिक मात्रामें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह रंज और गम दूर होगा ।

162 दिलसे रंज व गम दूर करनेका द्वितीय अमल

जिसको कोई मुसीबत अथवा रंज और गम हो वह 'يَـــا صَبُوْرُ' ('या सबूरु') १३५ (एक सो पैंतीस) मर्तबह पढ़ कर जनाबे इलाहीमें दुआ करें । इन्शाअल्लाह सब्र और सुकून प्राप्त होगा ।

सात दिन तक 'يَــا خَبِيْــرُ' ('या खबीरु') अधिक मात्रामें पढ़नेवालेके सामने इन्शाअल्लाह गय्बकी बातें ज़ाहिर होगी ।

171 कश्फके ज़रीए (गय्बकी बातें) ज़ाहिर होनेका चौथा अमल

होंट बंध करके दिलसे १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَــا بَــاطِنُ' ('या बातिनु') पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह अहले बातिन और गय्बी असरारका आलिम बनेगा, लेकिन हलाल रोज़ी शर्त है ।

172 कश्फके ज़रीए (गय्बकी बातें) ज़ाहिर होनेका पाँचवाँ अमल

- रातका तीसरा हिस्सा गुज़रनेके बा'द 'يَــا بَـاطِنُ' ('या बातिनु') सात दिन तक ३००० मर्तबह पढ़े और खामोश सो जाए ।
- इन्शाअल्लाह सात दिनमें गय्बकी बातें ज़ाहिर हो जाएगी ।

173 कश्फके ज़रीए (गय्बकी बातें) ज़ाहिर होनेका छठा अमल

रजब, शा'बान और रमज़ान महीनामें 'يَــا نَــافِـعُ' ('या नाफिउ') हररोज़ ७००० (सात हज़ार) मर्तबह पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह अहले कश्फ और अहले बातिन बन जाएगा ।

174 कश्फके ज़रीए आलमे गय्ब नज़र आनेका सातवाँ अमल

'يَــا اَللّٰــهُ يَا صَمَدُ' ('या अल्लाहु या स–म–दु') हररोज़ ११००० (ग्यारह हज़ार) मर्तबह पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह साहिबे

तस्ख़ीरे क़ल्ब (सम्मोहन, वशीकरन)

167 तस्ख़ीरे क़ल्बका अमल

सुब्ह सादिक़के बा'द सूर्योदय तक 'يَا قَيُّوْمُ' ('या क़य्यूमु') अधिक प्रमाणमें पढ़ना तस्ख़ीरे क़ल्बका मुजर्रब अमल है ।

तम्बीह : नाजाइज़ बाबतोंके लिए यह अमल करनेवालेको नुक़सान होगा ।

कश्फ और इल्हाम (दिलकी आँख और कानसे ग़ैबकी बातोंका इल्म होना)

168 कश्फ और ईमानके दरवाज़े खुलनेका प्रथम अमल

फजरकी नमाज़के बा'द 'يَا عَلِيْمُ' ('या अलीमु') १०० (एक सो) मर्तबह पढ़नेवालेके लिए इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआला कश्फ और ईमानके दरवाज़े खोलेगा ।

169 कश्फ और ईमानके दरवाज़े खुलनेका द्वितीय अमल

जुम्अहकी नमाज़के बा'द १०० (एक सो) मर्तबह 'يَا بَصِيْرُ' ('या बसीरु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआला दिलमें नूर पैदा फरमाएगा । और दिलकी आँखें खोलेगा ।

170 कश्फके ज़रीए (गय्बकी बातें) ज़ाहिर होनेका तीसरा अमल

- गुसल करके क़िब्लह रुख बैठ कर १११५ (एक हज़ार एक सो पंद्रह) मर्तबह 'يَا مُهَيْمِنُ' ('या मुहय्मिनु') तीन दिन तक पढ़े ।
- जिस कामका इस्तिखारह करेंगे उसका परिणाम इन्शाअल्लाह नज़र आएगा ।

179 इस्तिखारहका द्वितीय तरीक़ा

- जुम्अहकी रातको इशाकी नमाज़के बा'द सजदहमें जा कर १०० मर्तबह 'يَا عَلِيْمُ' ('या अलीमु') पढ़े और फिर खामोश सो जाए ।
- रातको इन्शाअल्लाह उस कामका परिपूर्ण स्थिति मा'लूम होगी ।

180 इस्तिखारहका तीसरा तरीक़ा

- जुमेरातको रोज़ह रखे ।
- मगरिबके समय रोज़ह इफतार करके अव्वल समयमें इशाकी नमाज़ पढ़े ।
- नीचे लिखे हूए अमलके आरंभ और अंतमें ११ (ग्यारह) मर्तबह :

'سُبْحَانَ رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ،
وَ سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ'

पढ़े ।
- ११०० (ग्यारह सो) मर्तबह 'يَـا خَبِيْـرُ اَخْبِـرْنِـىْ' ('या खबीरु अख्बिरनी') पढ़े और खामोश सो जाए ।
- इन्शाअल्लाह रातको अच्छा अथवा बुरा जो कुछ होगा वह मा'लूम हो जाएगा ।

181 इस्तिखारहका चौथा तरीक़ा

कश्फ और बुलंद मर्तबहवाला हो जाएगा ।और उसे कभी कभी आलमे गय्बका दीदार प्राप्त होगा ।

175 कश्फके ज़रीए आलमे गय्ब नज़र आनेका आठवाँ अमल

हररोज़ ३३ (तैंतीस) मर्तबह 'يَــا بَــاطِنُ' ('या बातिनु') पढ़नेवालेके सामने इन्शाअल्लाह गय्बकी बातें ज़ाहिर होने लगेगी और दिलमें अल्लाह तआलाकी मुहब्बत पैदा होगी ।

176 इल्हामके ज़रीए अपने कामकी हक़ीक़त मा'लूम करनेका प्रथम अमल

जिसको अपने कामकी सफलताकी कोई युक्ति समज़में न आती हो तो वह व्यक्ति मगरिब और इशाके दरमियान १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَــا رَشِيْـدُ' ('या रशीदु') पढ़े ।इन्शाअल्लाह स्वप्नमें युक्ति नज़र आएगी अथवा दिलमें उसका इल्हाम होगा ।

177 इल्हामके ज़रीए अपने कामकी हक़ीक़त मा'लूम करनेका द्वितीय अमल

- 'يَا بَدِيْعُ' इस मुबारक नामको बावुजू पढ़ कर सो जाए ।
- जिस कामका इरादा करेगा, वह उसे स्वप्नमें इन्शाअल्लाह नज़र आएगा ।

इस्तिखारह {किसी कामके करने, न करनेमें अल्लाहसे इशारह (संकेत) चाहना}

178 इस्तिखारहका प्रथम तरीक़ा

- सालिक जुम्अहकी रातको गुसल करके अेहरामकी तरह लुंगी और चादर बांध कर खडा हो कर आसमानकी तरफ निगाह उठा कर १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَا ضَارُّ' ('या ज़ार्रु') पढ़े ।
- सात जुम्अह तक इसी तरह करता रहे ।

इन्शाअल्लाह वह अवश्य साहिबे मक़ाम होगा और मुस्तहकम होगा ।

मोत

185 अच्छा मोत होनेके लिए प्रथम अमल

फजरकी सुन्नत और फर्ज़ नमाज़के दरमियान जो व्यक्ति १२१ (एक सो इक्कीस) मर्तबह 'يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ' ('या अल्लाहु या रहमानु') पढ़े तो इन्शाअल्लाह अच्छी मोत होगी ।

186 अच्छी मोत होनेके लिए द्वितीय अमल

हररोज़ १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَا اٰخِرُ' ('या आखिरु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दिलसे गैरुल्लाहकी मुहब्बत दूर हो जाएगी और अच्छी मोत होगी ।

187 अच्छी मोत होनेके लिए तीसरा अमल

सुब्ह और शाम 'يَا اَحَدُ' ('या अ–हदु') ४१ (एकतालीस) मर्तबह पढ़े । इन्शाअल्लाह अवश्य अच्छी मोत होगी ।

188 अच्छी मोत होनेके लिए चौथा अमल

सूर्योदयके समय १०० (एक सो) मर्तबह 'يَا وَارِثُ' ('या

किसी मुश्किल अथवा बडा काम करनेके लिए कोई युक्ति समज़में न आती हो तो 'يَا حَكِيْمُ' ('या हकीमु')को ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह सात दिन तक पढ़े । अल्लाह तआलाके फज़्लसे इस कामका रास्ता इन्शाअल्लाह जल्द निकल आएगा ।

तीसरा प्रकरण

रूहसे संबंधित बाबतें

जीवन

182 लंबे जीवनके लिए अमल

हर महीने चांदकी पहली तारीखको एक बेठकमें ४१००० (एकतालीस हज़ार) मर्तबह 'يَـــــا وَارِثُ' ('या वारिसु') पढ़े । अल्लाह तआलाके फज़्लसे जीवन लंबा होगा ।

रूहानी तरक्की (आत्माकी उन्नति)

183 ज़ाहिरी और बातिनी (रूहानी) दौलत और उन्नति प्राप्त करनेका अमल

फजर अथवा इशाकी नमाज़के बा'द आरंभ और अंतमें ११ मर्तबह दुरूद शरीफ पढ़ कर दरमियानमें ११११ मर्तबह 'يَا مُغْنِىْ' का वज़ीफा पढ़े और इसके साथ सूरए 'मुझझम्मिल' भी पढ़े तो अल्लाह तआला ज़ाहिरी और बातिनी गिना अर्पण फरमाएगा ।

184 अल्लाह तआलाका कुर्ब (निकटता) प्राप्त करनेका अमल

193 मगफिरतका द्वितीय अमल

हररोज़ असरकी नमाज़के बा'द 'يَا غَفَّارُ اِغْفِرْ لِيْ' ('या गफ्फारु इग्फिर ली') पढ़नेवालेको अल्लाह तआला बख्शे हूए लोगोंकी जमाअतमें दाखिल करेगा ।

194 मगफिरतका तीसरा अमल

सजदहकी हालतमें तीन मर्तबह 'رَبِّ اغْفِرْ لِيْ' पढ़नेवालेके अगले—पिछले गुनाह इन्शाअल्लाह माफ हो जाऐगें ।

195 मगफिरतका चौथा अमल

'يَا عَفُوُّ' ('या अफुव्वु') अधिक मात्रामें पढ़नेवालेके गुनाहोंको अल्लाह तआला माफ कर देगा ।

196 अल्लाह तआलाकी मुलाक़ातका अमल

एक चिल्ला (चालीस दिन)में एक लाख पच्चीस हज़ार मर्तबह 'يَا وَاحِدُ' ('या वाहिदु') पढ़नेवालेको इन्शाअल्लाह एक चिल्लामें अल्लाह तआलासे क़ल्बी मुलाक़ात प्राप्त होगी ।

197 अल्लाह तआलाका प्रिय बननेका अमल

हररोज़ 'يَا وَدُوْدُ' ('या वदूदु') १००० (एक हज़ार) मर्तबह ज़िक्र करनेवाला इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआलाका प्रिय बन जाएगा।

198 तमाम नेक आ'माल कुबूल होनेका प्रथम अमल

वारिसु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह गम और रंजसे सुरक्षित रहेगा और अच्छी मोत होगी ।

189 अचानक मोतसे सुरक्षाका अमल

'يَا بَصِيْرُ' ('या बसीरु')को हमेशा असरकी नमाज़के बा'द सात मर्तबह पढ़नेसे इन्शाअल्लाह अचानक मोतसे सुरक्षित रहेगा ।

क़बर

190 क़बरके अज़ाबसे सुरक्षाका अमल

जुम्अहकी नमाज़के बा'द १० (दस) मर्तबह 'يَا مُحْصِىُ' ('या मुह्सी') पढ़े तो क़बरके अज़ाब और आखिरतके अज़ाबसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा ।

191 क़बरमें रूहको 'रियाजुल् कुद्स'में उच्च मक़ाम प्राप्त होनेका अमल

हर जुम्अहको १०० (एक सो) मर्तबह 'يَا بَارِئُ' ('या बारिउ')का ज़िक्र करनेवाली व्यक्तिको क़बरमें दफन होनेके बा'द अल्लाह तआला 'रियाजुल् कुद्स'की जानिब उठा लेंगे ।

आखिरत (परलोक)

192 मगफिरतका प्रथम अमल

जुम्अहकी नमाज़के बा'द ('या गफ़्फ़ारु इग्फिर ली ज़ुनूबी') १०० (एक सो) मर्तबह पढ़नेवालेका नाम अल्लाह तआला बख्शे हूए लोगोंमें शामिल करेगा ।

चोथा प्रकरण

जादू, जिन्नात, बदनज़री, शयतान

जादू

203 जादूका असर दूर करनेका अमल

चीनीके बरतन पर ‘يَا قَهَّارُ’ (‘या क़ह्हारु’) लिख कर पिलानेसे इन्शाअल्लाह जादूका असर दूर हो जाएगा ।

204 जादू, जिन्नात, भूतप्रेतसे सुरक्षाका अमल

फजर और मगरिबकी नमाज़के बा’द २१ (इक्कीस) मर्तबह ‘يَا قَابِضُ’ (‘या क़ाबिज़ु’) हमेशा पढ़नेवाले पर इन्शाअल्लाह कोई जादू अथवा जिन्नात अथवा भूतप्रेतका असर न होगा ।

205 जादूसे सुरक्षाका अमल

७ (सात) मर्तबह ‘يَا مُمِيتُ’ (‘या मुमीतु’) पढ़ कर दम करे । इन्शाअल्लाह कभी भी कोई जादू असर नहीं करेगा ।

जिन्नात

206 जिन्नात, भूतप्रेतसे सुरक्षाका अमल

‘يَا حَفِيظُ’ (‘या हफीज़ु’) ५ (पाँच) मर्तबह लिख कर ता’वीज़ बना कर बाजू पर बांधे, कोई जिन्नात, भूतप्रेतका असर इन्शाअल्लाह नहीं होगा ।

जुम्अहकी रातको १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَـا بَـاقِـىْ' ('या बाक़ी') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह तमाम नेक काम मक़्बूल होंगे।

199 तमाम नेक आ'माल क़ुबूल होनेका द्वितीय अमल

फजरकी नमाज़के बा'द १०० मर्तबह और इशाकी नमाज़के बा'द १०० मर्तबह 'يَـــا رَشِـيْـدُ' ('या रशीदु') पढ़नेवालेके रात, दिनके आ'माल अल्लाह तआला अपने फज़्लसे क़ुबूल फरमाएगा और इन्शाअल्लाह उसे 'मुक़र्रबीन'का मर्तबह प्राप्त होगा।

200 सच्ची तव्बह नसीब होनेके लिए प्रथम अमल

'يَـــا مُـؤَخِّـرُ' ('या मुअख्खिरु') अधिक मात्रामें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह सच्ची तव्बह नसीब होगी।

201 सच्ची तव्बह नसीब होनेके लिए द्वितीय अमल

चाश्तकी नमाज़के बा'द 'يَـــا تَـوَّابُ' ('या तव्वाबु') ३६० (तीन सो साँठ) मर्तबह अथवा १०७ (एक सो सात) मर्तबह पढ़नेसे इन्शाअल्लाह सच्ची तव्बह नसीब होगी।

202 अल्लाह तआलाका ता'बेदार बननेका अमल

हमेशा 'يَـــا مُـقَـدِّمُ' ('या मुक़द्दिमु')का विर्द करनेवाला इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआलाका ता'बेदार बन जाएगा।

७ (सात) मर्तबह 'يَا بَرُّ' ('या बर्रु') पढ़ कर बालक पर दम करनेसे इन्शाअल्लाह वह बदनज़रीसे सलामत रहेगा ।

211 बदनज़रीसे रक्षाका तीसरा अमल

७ (सात) मर्तबह 'يَا مَانِعُ' ('या मानिउ') किसी तांबेकी पतरी पर नक्क़ाशी करके ता'वीज़के तौर पर बालकके गलेमें पहनाए। इन्शाअल्लाह कभी नज़र नहीं लगेगी ।

212 बदनज़रीसे रक्षाका चौथा अमल

११ मर्तबह 'يَا حَفِيظُ' कागज़ पर लिख कर ता'वीज़ बना कर गलेमें बांधे । इन्शाअल्लाह कभी नज़र नहीं लगेगी ।

शयतान

213 शयतानकी बुराईसे रक्षाका अमल

'يَامُؤْمِنُ' ('या मुअ्मिनु') १००१ (एक हज़ार एक) मर्तबह लिख कर ता'वीज़ बना कर अपने पास रखनेवाला शयतानकी बुराईसे और दुश्मनसे सुरक्षित रहेगा ।

पाँचवाँ प्रकरण

आफत, बला, मुसीबत, मुश्किली, दुश्मन, अत्याचारी, बुरी (दुष्ट) व्यक्ति

आफत, बला, मुसीबत, मुश्किलीसे सुरक्षाके लिए

207 जिन्नात, भूतप्रेतको घरसे दूर करनेका प्रथम अमल

- एक नए चिराग पर ७ (सात) जगह पर 'يَا قَهَّارُ' ('या क़ह्हारु') लिख कर तेल भर कर जलाया जाए ।
- जिस घरमें यह चिराग ११ (ग्यारह) दिन जलता रहेगा, अल्लाह तआलाके फज़्लसे उस घरमें कोई जिन्नात अथवा भूतप्रेत अथवा साँप आदि मूज़ी जानवर नहीं रहेंगे । और वह मकान तमाम आफतोंसे सुरक्षित रहेगा ।

208 जिन्नात, भूतप्रेतको घरसे दूर करनेका द्वितीय अमल

फजरकी नमाज़के बा'द 'يَـا نُـوْرُ' ('या नूरु') ११२१ (एक हज़ार एक सो इक्कीस) मर्तबह हररोज़ पढ़ना मकानको नूरानी करता है । वहाँ इन्शाअल्लाह कोई जिन्नात, भूतप्रेत अथवा साँप आदि मूज़ी जानवरका अस्तित्व नहीं रहेगा ।

बदनज़री

209 बदनज़रीसे रक्षा का प्रथम अमल

७ (सात) दिन तक हररोज़ सुब्ह और शाम ७० (सत्तर) मर्तबह 'حَسْبِيَ اللّٰـهُ الْحَسِيْبُ' ('हस्बियल्लाहुल् हसीबु') पढ़े । यह अमल जुमेरातसे शुरू करे । इन्शाअल्लाह एक साल तक हर बलासे सुरक्षित रहोगे ।

210 बदनज़रीसे रक्षाका द्वितीय अमल

218 हर आफत, बला, मुश्किली, मुसीबतसे रक्षाका प्रथम अमल

जो शख्स आफत, मुसीबत आदिमें मुब्तला हो वह दो रका'त नफल नमाज़ पढ़ कर अपना हेतु दिलमें सोच कर १०० बार 'يَا لَطِيْفُ' पढ़ेगा तो इन्शाअल्लाह आफत, मुसीबत दूर होगी।

219 हर आफत, बला, मुश्किली, मुसीबतसे रक्षाका द्वितीय अमल

जो व्यक्ति गुसल करके क़िब्लह रुख बैठ कर १११५ (एक हज़ार एक सो पंद्रह) मर्तबह 'يَـا مُهَيْـمِنُ' ('या मुहय्मिनु') हररोज़ पढ़ेगा वह इन्शाअल्लाह तमाम आफतोंसे सुरक्षित रहेगा।

220 हर आफत, बला, मुश्किली, मुसीबतसे रक्षाका तीसरा अमल

अधिक मात्रामें 'يَـا وَالِيُّ' ('या वालियु')का विर्द करनेवाला इन्शाअल्लाह आफतोंसे सुरक्षित रहेगा।

221 हर आफत, बला, मुश्किली, मुसीबतसे रक्षाका चौथा अमल

अधिक मात्रामें 'يَا رَحْمٰنُ' ('या रहमानु')का विर्द करनेवाला इन्शाअल्लाह आफतोंसे सुरक्षित रहेगा।

222 हर आफत, बला, मुश्किली, मुसीबतसे रक्षाका पाँचवाँ अमल

214 आसमानी आफतोंसे सुरक्षाका प्रथम अमल

किसी भी आसमानी आफतके समय 'يَـــا وَكِيْــلُ' ('या वकीलु') अधिक मात्रामें पढ़ कर इसे अपना वकील बना लेनेसे इन्शाअल्लाह आफतोंसे रक्षा होगी ।

215 आसमानी आफतोंसे सुरक्षाका द्वितीय अमल

मगरिबकी नमाज़के बा'द १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَـــا عَـدْلُ' ('या अद्लु')का विर्द करनेवाला इन्शाअल्लाह हर प्रकारकी आसमानी आफतोंसे सुरक्षित रहेगा ।

216 बारिश, तूफान, ग्रहणसे रक्षाका प्रथम अमल

अगर किसी जगह बारिश अथवा तूफान अथवा तेज़ हवा चले तो 'يَا ظَاهِرُ' ('या ज़ाहिरु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह रक्षा होगी ।

217 बारिश, तूफान, ग्रहणसे रक्षाका द्वितीय अमल

- 'اَللّٰـهُ نُـوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا نُوْرُ' ('अल्लाहु नूरुस्समावाति वल् अर्दि या नूरु') १००० (एक हज़ार) मर्तबह पढ़नेसे बारिशकी तमाम अंधेरियाँ अल्लाह तआलाके हुक्मसे दूर होगी ।
- सूर्यग्रहण और चँदग्रहणके समय ऊपर लिखित आयत और 'يَـــا نُوْرُ' ('या नूरु') मिला कर असंख्य मर्तबह पढ़नेसे इन्शाअल्लाह रक्षा होगी ।

227 हर आफत, बला, मुश्किली, मुसीबतसे रक्षाका दसवाँ अमल

सूर्योदयसे पहले 'يَـــا صَبُــوْرُ' ('या सबूरु') १०० मर्तबह पढ़नेवाला उस दिन तमाम मुसीबतसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा ।

228 हर आफत, बला, मुश्किली, मुसीबतसे रक्षाका ग्यारहवाँ अमल

१०२० (एक हज़ार बीस) मर्तबह 'يَــا صَبُوْرُ' ('या सबूरु') पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह आफतसे मुक्ति पाओगा और दिली शांति नसीब होगी ।

229 हर आफत, बला, मुश्किली, मुसीबतसे रक्षाका बारहवाँ अमल

फजरकी नमाज़के बा'द १० मर्तबह 'يَا مُحْصِى' पढ़नेवाला पूरा दिन इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआलाकी रक्षामें रहेगा ।

230 हर नुक़सानसे रक्षाका अमल

जुम्अहकी रातको 'يَــا بَــاقِىْ' ('या बाक़ी') १००० (एक हज़ार) मर्तबह पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह नुक़सानसे सुरक्षित रहेगा ।

आफत, बला, मुसीबत, मुश्किली दूर होनेके लिए

231 मुसीबत और मुश्किली दूर होनेके लिए प्रथम अमल

'يَــــــا سَلَامُ' ('या सलामु')का हमेशा ज़िक्र करनेवाला इन्शाअल्लाह तमाम आफतोंसे सुरक्षित रहेगा ।

223 हर आफत, बला, मुश्किली, मुसीबतसे रक्षाका छठा अमल

'يَا خَالِقُ'को ७ दिन तक १०० मर्तबह मुसल्सल (सतत) पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह तमाम आफतोंसे सुरक्षित रहेगा ।

224 हर आफत, बला, मुश्किली, मुसीबतसे रक्षाका सातवाँ अमल

हररोज़ हर नमाज़के बा'द 'يَا رَحِيمُ' ('या रहीमु') पढ़नेवाला तमाम आफतोंसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा ।

225 हर आफत, बला, मुश्किली, मुसीबतसे रक्षाका आठवाँ अमल

जो शख्स जुम्अहकी नमाज़के बा'द रोटी पर 'سُبُّــــوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰئِكَةِ وَالرُّوحُ' *('सुब्बूहुन् कुद्दूसुन् रब्बुना व रब्बुल् मलाइकति वर्रूहु')* लिख कर खाएगा, अल्लाह तआला उस शख्सको हर आफतसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रखेगा ।

226 हर आफत, बला, मुश्किली, मुसीबतसे रक्षाका नवाँ अमल

जुम्अहकी रातको १०० (एक सो) मर्तबह 'يَــا ضَــارُّ' ('या ज़ार्रु') पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह तमाम आफतोंसे सुरक्षित रहेगा ।

इन्शाअल्लाह दूर हो जाएगी और कोई हाजत बाक़ी नहीं रहेगी ।

235 आफत, बला, मुसीबत, मुश्किली दूर होनेके लिए पाँचवाँ अमल

हर फर्ज़ नमाज़के बा'द 'يَا رَافِعُ' ('या राफिउ') २१ मर्तबह हमेशा पढ़नेवालेकी इन्शाअल्लाह कोई हाजत बाक़ी नहीं रहेगी ।

236 आफत, बला, मुसीबत, मुश्किली दूर होनेके लिए छठा अमल

४१ मर्तबह 'يَا قَادِرُ' ('या क़ादिरु') पढ़नेवालेकी इन्शाअल्लाह मुश्किली दूर हो जाएगी और काम आसान हो जाएगा ।

237 आफत, बला, मुसीबत, मुश्किली दूर होनेके लिए सातवाँ अमल

- मुसल्सल (सतत) तीन जुम्अह तक जुम्अहकी रातको ४००० (चार हज़ार) मर्तबह 'يَـــا اَوَّلُ' ('या अव्वलु') पढ़नेसे अल्लाह तआलाके फज़्लसे तमाम मुश्किलियाँ दूर हो जाऐंगी ।
- जो व्यक्ति ४० (चालीस) जुम्अह तक मुसल्सल (सतत) पढ़ता रहेगा वह बेशुमार सफलताओका मालिक बनेगा ।

238 आफत, बला, मुसीबत, मुश्किली दूर होनेके लिए आठवाँ अमल

'يَـــا رَشِيْـدُ' ('या रशीदु')को १००० (एक हज़ार) मर्तबह हमेशा पढ़नेवालेके बगैर महेनत और बगैर युक्तिके तमाम काम अच्छी तरह परिपूर्ण होंगे ।

मगरिब और इशाके दरमियान 'يَــــاوَارِثُ' ('या वारिसु') १००० (एक हज़ार) मर्तबह पढ़नेसे इन्शाअल्लाह हर प्रकारकी मुसीबत और परेशानी दूर हो जाएगी ।

232 मुसीबत और मुश्किली दूर होनेके लिए द्वितीय अमल

'يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ' ('या अरहमर्राहिमीन')का विर्द करना तमाम आफतोंका मुजर्रब इलाज है ।

हज़रत ज़ैद रदियल्लाहु तआला अन्हुको एक मर्तबह एक बेरहम डाकूने पकड कर क़त्ल करनेका इरादा किया । उन्होंने इस परेशानीके समय तीन मर्तबह 'يَــــا اَرْحَــــمَ الــرَّاحِــمِيْــنَ' ('या अरहमर्राहिमीन') ज़बानसे कहा तो तत्काल अल्लाह तआलाने आसमानसे एक फरिश्ता भेजा, जिसने वहाँ पहूँच कर उस डाकूको क़त्ल कर दिया, और उनको मुक्ति दिलाई ।

233 आफत, बला, मुसीबत, मुश्किली दूर होनेके लिए तीसरा अमल

कोई आफत आए तो 'يَا قَادِرُ' ('या क़ादिरु') ४१ मर्तबह पढ़नेसे इन्शाअल्लाह वह आफत दूर हो जाएगी ।

234 आफत, बला, मुसीबत, मुश्किली दूर होनेके लिए चौथा अमल

४१ (एकतालीस) मर्तबह 'يَا رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَرَحِيْمَهَا' *('या रहमानुद् दुन्या व रहीमहा')* पढ़नेवालेकी मुश्किलियाँ

244 दुश्मनसे सुरक्षाका चौथा अमल

७५ मर्तबह 'يَـــا مُـذِلُّ' ('या मुज़िल्लु') पढ़ कर सजदहमें दुश्मनका नाम लेकर दुआ करे तो इन्शाअल्लाह दुआ कुबूल होगी ।

245 दुश्मनसे सुरक्षाका पाँचवाँ अमल

जो व्यक्ति दो रका'त पढ़ कर १०० (एक सो) मर्तबह 'يَا قَادِرُ' ('या क़ादिरु') पढ़े (और वह हक़ पर हो) तो अल्लाह तआला उसके दुश्मनोंको इन्शाअल्लाह अपमानित करेगा ।

246 दुश्मनसे सुरक्षाका छठा अमल

'يَا مُقَدِّمُ' ('या मुक़द्दिमु') अधिक मात्रामें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दुश्मनोंसे रक्षा रहेगी ।

247 दुश्मनसे सुरक्षाका सातवाँ अमल

- 'يَا مَالِكُ يَا قُدُّوسُ' ('या मालिकु या कुद्दूसु') मिला कर दोनों नाम १००० (एक हज़ार) मर्तबह हररोज़ अंधेरेमें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दुश्मनसे रक्षा रहेगी ।
- यह वज़ीफा पढ़नेवालेकी इज़्ज़त और आबरूमें इन्शाअल्लाह वृद्धि ही होती रहेगी ।

248 दुश्मनसे सुरक्षाका आठवाँ अमल

१०२० (एक सो बीस) मर्तबह 'يَـــا صَبُـوْرُ' ('या सबूरु') पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह आफतसे मुक्ति प्राप्त करेगा और दिली शांति नसीब होगी ।

239 मुसीबत और गमसे मुक्तिका अमल

कोई भी गम, मुसीबत अथवा मुश्किलीके समय 'يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ' *('या बदीअस्समावाति वल् अर्दि')* पढ़नेसे इन्शाअल्लाह उससे मुक्ति नसीब होगी।

240 दोनों जहाँकी परेशानियाँ दूर होनेका अमल

'حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ' *('हस्बुनल्लाहु व निअ्मल् वकीलु')* अधिक मात्रामें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दुनिया और आखिरतकी तमाम परेशानियाँ दूर हो जाएगी।

दुश्मन

241 दुश्मनसे सुरक्षाका प्रथम अमल

किसी मुसीबत अथवा दुश्मनका डर हो तो 'اَلرَّحْمٰنُ' 'الرَّحِيْمُ' अधिक मात्रामें ज़िक्र करनेसे अथवा लिख कर बांघनेसे अल्लाह तआला दुश्मनसे इन्शाअल्लाह पनाह नसीब फरमाऐंगे।

242 दुश्मनसे सुरक्षाका द्वितीय अमल

'يَا قُدُّوْسُ' ('या कुद्दूसु')का अधिक मात्रामें ज़िक्र करनेवालेको अल्लाह तआला दुश्मनसे सुरक्षित रखेगा।

243 दुश्मनसे सुरक्षाका तीसरा अमल

'يَا رَافِعُ' ('या राफिउ') ७० (सत्तर) मर्तबह पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह दुश्मनोंसे सुरक्षित रहेगा।

३ (तीन) रोज़ह रख कर चोथे दिन एक जगह बैठ कर ७० (सत्तर) मर्तबह 'يَـا خَـافِضُ' ('या खाफिज़ु') पढ़नेसे दुश्मनों पर इन्शाअल्लाह सफलता प्राप्त होगी ।

254 दुश्मनको दूर करनेका अमल

'يَـــا قَـــوِيُّ' ('या क़विय्यु') अधिक मात्रामें पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह दुश्मनसे सुरक्षित रहेगा । (नाहक़ और बिला वजह यह अमल कभी न करे ।)

255 दुश्मनसे अल्लाह बदला ले उसका अमल

जो व्यक्ति हक़ पर हो, लेकिन दुश्मनसे बदला लेनेकी शक्ति न रखता हो तो तीन जुम्अह तक अधिक मात्रामें 'يَا مُنْتَقِمُ' ('या मुन्तक़िमु') पढ़े, अल्लाह तआला खूद ब खूद उसके दुश्मनसे इन्शाअल्लाह बदला ले लेगा ।

256 दुश्मनको नरम करनेका अमल

फजरकी नमाज़के बा'द ५०० (पाँच सो) मर्तबह 'يَا رَحِيْمُ' ('या रहीमु') पढ़नेवाले पर तमाम मख्लूक़ महरबान होगी । अगर दुश्मन भी सामने आ जाएगा तो इन्शाअल्लाह नरम हो जाएगा ।

257 दुश्मनको पराजित करनेका प्रथम अमल

'يَا مُؤْمِنُ' ('या मुअ्मिनु') १००१ (एक हज़ार एक) मर्तबह लिख कर ता'वीज़ बना कर अपने पास रखनेवालेकी शयतानका बुराईसे इन्शाअल्लाह रक्षा होगी । कोई दुश्मन उस पर क़ाबू नहीं पा सकेगा ।

249 दुश्मनसे सुरक्षाका नवाँ अमल

फजरकी सुन्नतके बा'द फर्ज़ नमाज़से पहले १०० (एक सो) मर्तबह ११ (ग्यारह) दिन तक 'يَـــا قَهَّـــارُ' ('या क़ह्हारु') पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह दुश्मनसे सुरक्षित रहेगा ।

250 दुश्मनसे सुरक्षाका दसवाँ अमल

'يَا خَافِضُ' ('या खाफिज़ु') ५०० (पाँच सो) मर्तबह हररोज़ फजरकी नमाज़के बा'द पढ़नेवाला हमेशा अल्लाह तआलाकी रहमतमें तमाम दुश्मनोंसे सुरक्षित हो कर जीवन गुज़ारेगा ।

251 दुश्मनसे सुरक्षाका ग्यारहवाँ अमल

जिस व्यक्तिको दुश्मनसे मुक़ाबलाकी शक्ति न हो वह गेहूँका आटा लेकर १००१ गोली बनाए । इसके बा'द एक गोली उठा कर 'يَـــا قَوِىُّ' पढ़ कर गोली पर दम करे, इसके बा'द वह गोली मुर्गीके सामने डाले और दिलमें दुश्मनके मुक़ाबलाकी निय्यत करे । इस तरह तमाम गोलियाँ मुर्गीको खिलाए । इन्शाअल्लाह तीन दिनके मुसल्सल (सतत) अमलसे दुश्मन पराजित होगा ।

252 दुश्मनसे सुरक्षाका बारहवाँ अमल

हररोज़ फजरकी नमाज़के बा'द १०० मर्तबह 'يَـا حَـمِيْـدُ' पढ़नेवालेके सामने दुश्मन भी आ जाएगा तो इन्शाअल्लाह नीची निगाहसे चला जाएगा । कभी मिज़ाजके विरुद्ध बात नहीं करेगा ।

253 दुश्मन पर सफलता प्राप्त करनेका अमल

263 ज़ालिमोंके ज़ुल्मसे सुरक्षाका द्वितीय अमल

'يَـا صَـمَـدُ' ('या स–मदु') इशाकी नमाज़के बा'द ११५ (एक सो पंद्रह) मर्तबह हररोज़ पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह कभी किसी ज़ालिमकी पकडमें नहीं आएगा ।

264 ज़ालिमोंके ज़ुल्मसे सुरक्षाका तीसरा अमल

७५ (पछत्तर) मर्तबह 'يَـا مُـذِلُّ' ('या मुज़िल्लु') पढ़ कर सजदहमें जा कर दुआ माँगनेवाला हासिदीन (ईर्ष्यालु), दुश्मन और ज़ालिमोंकी बुराईसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा ।

265 ज़ालिमसे मुक्तिका अमल

ज़ालिम पर 'يَـا تَـوَّابُ' ('या तव्वाबु') १० (दस) मर्तबह पढ़ कर दम करनेसे इन्शाअल्लाह इससे मुक्ति नसीब होगी ।

266 लौग तकलीफ दे और गीबत करे उससे रक्षाका अमल

जो व्यक्ति 'يَـا جَبَّارُ' ('या जब्बारु')की पाबंदी करेगा वह लोगोंकी तकलीफ और गीबतसे सुरक्षित रहेगा और अल्लाह तआला इसे साहिबे इज़्ज़त और घनवान करेगा ।

267 बुरी (दुष्ट) व्यक्तिके पास अपना हक़ प्राप्त करनेका अमल

जिस व्यक्तिका किसीके पास हक़ बाक़ी हो और वह अदा न करता हो तो 'يَـا مُذِلُّ' ('या मुज़िल्लु')का अधिक मात्रामें ज़िक्र

258 दुश्मनको पराजित करनेका द्वितीय अमल

३०० (तीन सो) मर्तबह 'يَـــا خَـــالِـقُ' ('या खालिकु') पढ़नेवालेसे इन्शाअल्लाह उसका दुश्मन पराजित होगा ।

259 दुश्मनसे मुक्ति प्राप्त करनेका अमल

जिस व्यक्ति पर कोई दुश्मन हावी हो वह तीन जुम्अह तक हर जुम्अहके दिन ७००० मर्तबह 'يَـــا مُـــنْتَـقِـمُ' पढ़े तो इन्शाअल्लाह इस मुद्दतमें दुश्मनकी पकडसे मुक्ति प्राप्त कर लेगा ।

260 दुश्मनको ता'बे करनेका अमल

'يَـــا بَـــاقِـيُ' ('या बाक़ी') सनीचरके दिन ज़वाल (सूरज ढ़लने)के समयसे लेकर ज़ोहरकी नमाज़ तक ७००० (सात हज़ार) मर्तबह पढ़नेसे इन्शाअल्लाह दुश्मन ता'बे हो जाएगा ।

261 दुश्मनसे मुक्ति प्राप्त करनेका अमल

रातको और दिनको बारह बजे ५००० (पाँच हज़ार) मर्तबह 'يَـــا مُـــنْتَـقِـمُ' ('या मुन्तक़िमु') पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह दुश्मनकी पकडसे जल्द मुक्ति प्राप्त करेगा ।

अत्याचारी (ज़ालिम) और बुरी (दुष्ट) व्यक्ति

262 ज़ालिमोंके जुल्मसे सुरक्षाका प्रथम अमल

हररोज़ सुब्ह और शाम २२६ मर्तबह 'يَـا جَبَّارُ' पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह ज़ालिमोंके जुल्म और अत्याचारसे सुरक्षित रहेगा ।

जब वह मकान खाली होगा तब गिरेगा । उस मकानके गिरनेसे किसी मानवकी अचानक मोत इन्शाअल्लाह नहीं होगी ।

272 भूकंपसे मकानकी रक्षाका अमल

मकानके सबसे उच्च हिस्से पर अथवा दीवार पर 'يَـــا ظَـاهِـرُ' ('या ज़ाहिरु') लिखनेसे वह मकान अथवा दीवार भूकंपसे इन्शाअल्लाह सलामत रहेगी ।

273 मकान पर बिजली गिरनेसे रक्षाका अमल

७ मर्तबह 'يَـــا وَكِيْـلُ' लिख कर मकानके उच्च हिस्सेमें लगा दे । इन्शाअल्लाह कभी उस मकान पर बिजली नहीं गिरेगी ।

274 मकान कभी वेरान न हो उसका अमल

३१३ मर्तबह 'يَـــا وَالِىُّ' ('या वालियु') पढ़ कर पानी पर दम करके मकानके चारों कोनों पर छिडकनेसे इन्शाअल्लाह वह मकान अथवा जागीर कभी वेरान अथवा खाली न रहेंगे ।

275 चीज़की रक्षा और बरकतके लिए अमल

'يَا حَلِيْمُ' ('या हलीमु') कागज़ पर लिख कर पानीमें घोल कर उस पानीको जिस चीज़ पर छिडका अथवा लगाया जाए उस चीज़में इन्शाअल्लाह बरकत होगी और वह चीज़ सुरक्षित रहेगी ।

276 माल और दौलतकी रक्षाका अमल

अपने माल और दौलत पर हररोज़ ७ मर्तबह 'يَـــا رَقِيْـبُ' पढ़ कर दम करनेसे इन्शाअल्लाह तमाम आफतोंसे सुरक्षित रहेगा ।

करनेसे इन्शाअल्लाह वह उसका हक़ अदा कर देगा ।

268 चोर, डाकू, बुरी (दुष्ट) व्यक्ति और बुरी चीज़ोंसे रक्षाका पहला अमल

जुमेरातसे आरंभ करके आठ दिन तक सुब्ह और शाम ७० मर्तबह 'حَسْبِىَ اللّٰهُ الْحَسِيْبُ' पढ़नेवाला हर चीज़की बुराईसे और हर बलासे पूरा साल इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा ।

269 चोर, डाकूसे रक्षाका दूसरा अमल

'يَاوَكِيْلُ' ('या वकीलु')का विर्द करनेसे इन्शाअल्लाह हर तकलीफ अथवा नुक़सानसे रक्षा होगी ।

माल, दौलत तथा जानकी सुरक्षा

270 मकानकी रक्षाका अमल

नए मटके पर 'يَــا وَالِىُ' ('या वालियु') लिख कर उसमें पानी भर कर मकानमें चारों दीवार पर छिडकनेसे वह मकान इन्शाअल्लाह हर आफतोंसे सुरक्षित रहेगा ।

271 मकान और निवासीकी रक्षाका अमल

अपने रहनेके मकानके ऊपरके हिस्सेमें ३ (तीन) जगह 'يَــا اَللّٰـهُ' ('या अल्लाहु') लिखे तो जब तक यह मुबारक नाम वहाँ लिखा हुवा क़ाइम रहेगा वहाँ तक कभी भी उस मकानके नीचे दब कर किसीकी मोत नहीं होगी, कभी सोते अथवा जागतेमें वह मकान किसी पर नहीं गिरेगा । जब वह खूद मकान तोडेगा अथवा

281 खेतकी रक्षाका अमल

चार ठीकरी ले कर हर ठीकरी पर तीन मर्तबह 'اَللّٰهُ بَاقِىْ' ('अल्लाहु बाक़ी') लिख कर खेत अथवा बागके चारों कोनों पर एक–एक ठीकरी दफन कर दे । अल्लाह तआलाके फज़्लसे वह खेत बरबाद होनेसे सलामत रहेगा ।

282 पशुकी रक्षाका अमल

'يَا حَلِيْمُ' ('या हलीमु') कागज़ पर लिख कर पानीमें घोल कर उस पानीको पशु पर छांटनेसे अथवा मलनेसे इन्शाअल्लाह वह आफतोंसे सुरक्षित रहेगा ।

283 घोडेका तूफान और मस्ती दूर करनेका अमल

जिस व्यक्तिका घोडा मस्तीखोर और तूफानी हो तो चनेके आटे पर ३०० मर्तबह 'يَــــا وَدُوْدُ' पढ़ कर आटे पर दम करके घोडेको खिलाए तो अल्लाह तआलाके फज़्लसे इन्शाअल्लाह तीन दिनमें वह तमाम सरकशी और तूफान भूल जाएगा ।

अपनी ज़ात और परिवारकी सुरक्षाके लिए

284 संतान, माल और दौलतकी रक्षाका अमल

संतान और माल तथा दौलत पर हररोज़ ७ (सात) मर्तबह 'يَــا رَقِيْــبُ' ('या रक़ीबु') पढ़ कर दम करनेसे इन्शाअल्लाह वह तमाम आफतोंसे सुरक्षित रहेंगा ।

277 जागीर और संपत्ति क़ाइम रहनेका अमल

'يَا مَالِكُ يَا قُدُّوسُ' ('या मालिकु या कुद्दूसु') दोनों नाम मिला कर हररोज़ १००० (एक हज़ार) मर्तबह अंधेरेमें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह जागीर और संपत्ति क़ाइम रहेगी ।

278 गिरे हूए मकानमें दबी हूई व्यक्तिकी जानकी रक्षाका अमल

गुसल करके क़िब्लह रुख बैठ कर १११५ (एक हज़ार एक सो पंद्रह) मर्तबह 'يَا مُهَيْمِنُ' ('या मुहय्मिनु') तीन दिन तक पढ़नेवाली व्यक्ति पर किसी मकानकी छत तूट पडे और वह उसमें दब जाए फिर भी अल्लाह तआलाके फज़्लसे वह व्यक्ति इस अचानककी मुसीबतसे इन्शाअल्लाह सलामत बाहिर निकलेगी ।

खेती और पशुकी सुरक्षाके लिए

279 बाग और खेतकी फसलकी रक्षाका अमल

हररोज़ फजरकी नमाज़के बा'द ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह 'يَا مُنْعِمُ' ('या मुन्इमु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह बाग और खेत हर प्रकारके नुक़सानसे सुरक्षित रहेगा ।

280 तिडीसे खेतकी रक्षाका अमल

चार नई ठीकरी पर ७ (सात) मर्तबह 'يَا مَانِعُ' ('या मानिउ') हर एक पर लिख कर खेतमें चारों कोनोंमें दफन कर दे, तो इन्शाअल्लाह उस खेत पर तिडी नहीं आएगी ।

'يَـــا وَدُوْدُ' ('या वदूदु') १००० मर्तबह पढ़ कर खानेकी चीज़ पर दम करके वह खाना पत्नीके साथ बैठ कर खानेसे दोनोंमें मुहब्बत पैदा होगी और कुसंप इन्शाअल्लाह दूर हो जाएगा ।

290 पति—पत्नीमें मुहब्बतका तीसरा अमल

बिस्तर पर लेटते समय २० (बीस) मर्तबह 'يَا مَانِعُ' ('या मानिउ') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह पति—पत्नीका कुसंप दूर हो जाएगा और आपसमें मुहब्बत पैदा होगी ।

291 पति—पत्नीका कुसंप दूर करनेका अमल

- पत्नी हररोज़ १००१ (एक हज़ार एक) मर्तबह 'يَا مُؤْمِنُ' ('या मुअ्मिनु') पढ़े तो पतिकी बुराई, बदखुल्क़ी और खराब सुलूकसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगी ।
- अगर पति पढ़े तो पत्नीकी बुराई और पडोसीकी बुराईसे सुरक्षित रहेगा ।

292 पति—पत्नीको आपसकी बुराईसे बचनेका अमल

१००१ मर्तबह किसी खानेकी चीज़ पर 'يَـا حَـكِيْـمُ' ('या हकीमु') पढ़ कर दम करके दोनों खाए तो इन्शाअल्लाह तत्काल ही दोनोंमें संप होगा और आपसकी मुहब्बतमें वृद्घि होगी ।

293 पति—पत्नीका कुसंप दूर होनेका अमल

- १११ (एक सो ग्यारह) मर्तबह 'يَا وَاجِدُ' ('या वाजिदु') पढ़ कर पानी पर दम करके जिस व्यक्तिको वह पानी पिलाया जाए वह

285 अपने ज़ाहिर और बातिनकी रक्षाका अमल

'يَـا مُؤْمِنُ' पढ़नेसे अथवा लिख कर अपने पास रखनेसे ज़ाहिर और बातिन अल्लाह तआलाके अमान (सुरक्षा)में रहेंगे ।

286 डर और भयसे रक्षाका अमल

६३० (छे सो) मर्तबह 'يَا مُؤْمِنُ' ('या मुअ्मिनु') पढ़नेवाला हर प्रकारके भय और डरसे सुरक्षित रहेगा और उसके जान और मालको कोई नुक़सान नहीं पहूँचेगा ।

287 डर, भय और नुक़सानसे रक्षाका अमल

'يَـا حَفِيْظُ' ('या हफीज़ु') अधिक मात्रामें पढ़नेवाला अथवा लिख कर अपने पास रखनेवाला हर प्रकारके डर, भय और नुक़सानसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा ।

छठा प्रकरण

घर और समाज

पति–पत्नी

288 पति–पत्नीमें मुहब्बतका प्रथम अमल

खानेकी चीज़ पर 'يَا كَبِيْرُ' ('या कबीरु') पढ़ कर दम करके पतिको खिलाए तो इन्शाअल्लाह आपसमें मुहब्बत पैदा होगी ।

289 पति–पत्नीमें मुहब्बतका द्वितीय अमल

पत्नी आधी रातको अथवा दोपहरको 'يَــــا صَبُــوْرُ' ('या सबूरु') ११०१ मर्तबह पढ़ कर अल्लाह तआलासे दुआ करे, इन्शाअल्लाह चंद दिनोंमें उसकी इस्लाह हो जाएगी ।

299 अपनी पत्नीयोंके साथ अन्यायका सुलूक करनेवाले पतिकी इस्लाहका अमल

जो शख्स अपनी पत्नीयोंमें न्याय न कर सकता हो तो ७००० (सात हज़ार) मर्तबह 'يَا مُقْسِطُ' ('या मुक़्सितु') पढ़ कर खानेकी चीज़ पर दम करके उस अन्यायी पतिको खिलाया जाए तो इन्शाअल्लाह वह तत्काल ही न्यायी स्वभावका बन जाएगा ।

300 पतिकी मुहब्बत प्राप्त करनेका अमल

अगर पत्नी अपने पतिके लिए ३००० मर्तबह 'يَــا وَدُوْدُ' पढ़ कर किसी भी इत्र पर दम करे और वही इत्र लगा कर पतिके सामने जाए तो इन्शाअल्लाह पति अपनी पत्नीसे मुहब्बत करेगा ।

301 पतिकी हमेशाकी मुहब्बत प्राप्त करनेका अमल

दुल्हन रुख्सत हो कर जब अपने पतिके सामने जाए तब ७ मर्तबह 'يَا رَؤُوْفُ' ('या रऊफु') पढ़ ले, इन्शाअल्लाह पति पूरा जीवन पत्नी पर महरबान रहेगा ।और कभी कुसंप नहीं होगा ।

302 पतिकी निगाहमें उच्च स्थान प्राप्त करनेका प्रथम अमल

पत्नी १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ'

व्यक्ति इन्शाअल्लाह ज़ियादह मुहब्बत करेगी ।

- पति–पत्नीकी मुहब्बतके लिए यह अमल अति लाभदायक है ।

294 बद अख्लाक़ पतिकी इस्लाहका अमल

पत्नी तीन दिन तक ३०० (तीन सो) मर्तबह 'يَـا بَـاسِطُ' ('या बासितु') पढ़ कर पानी पर दम करके पतिको पिलाए अथवा खानेकी चीज़ पर दम करके खिलाए तो बद मिज़ाज पति पत्नीके साथ इन्शाअल्लाह खराब सुलूक नहीं करेगा ।

295 बद अख्लाक़ पतिकी इस्लाहका अमल

पत्नी 'يَـا وَلِيُّ' पढ़ते पढ़ते बद सुलूक पतिके पास जाएगी तो इन्शाअल्लाह वह महरबानीसे अच्छा सुलूक करेगा ।

296 बखील पतिकी इस्लाहका अमल

- पत्नी 'يَـا كَرِيْمُ' ('या करीमु') १००० (एक हज़ार) मर्तबह पढ़ कर पानी पर दम करके बखील पतिको पिलाए ।
- तीन दिनके अंदर इन्शाअल्लाह उसमें सखावतका गुण पैदा होगा और बखीलीमें इन्शाअल्लाह कमी हो जाएगी ।

297 गुस्सावर पतिकी इस्लाहका अमल

पत्नी सुब्ह और शाम 'يَـا مَانِعُ' ('या मानिउ') २१ (इक्कीस) मर्तबह पढ़ कर गुस्सावर पतिकी तरफ सामनेसे अथवा पीछेसे दम करे ।इन्शाअल्लाह चंद दिनोंमें सब शिकायतें दूर हो जाएगी ।

298 पतिकी बद कलामीकी इस्लाहका अमल

- पति अपनी बद सूलूक पत्नीके सामने जाए तब 'يَا وَلِيُّ' ('या वलिय्यु') पढ़े, इन्शाअल्लाह उसकी आदतें सुघर जाएगी ।
- यह अमल पत्नी भी अपने बद सुलूक पतिकी इस्लाहके लिए कर सकती है ।

संतान

306 संतानकी रक्षाका प्रथम अमल

बालककी पैदाइशके बा'द तत्काल ७ (सात) मर्तबह 'يَا بَرُّ' ('या बर्रु') पढ़ कर उस पर दम करनेसे बालिग होने तक वह बालक तमाम आफतोंसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा ।

307 संतानकी रक्षाका द्वितीय अमल

अपने बाल–बच्चों पर हररोज़ ७ मर्तबह 'يَا رَقِيْبُ' पढ़ कर दम करनेसे वह तमाम आफतोंसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा ।

308 नाफरमान संतानकी इस्लाहका प्रथम अमल

हररोज़ सुब्ह नाफरमान संतानके सर पर हाथ रख कर आसमानकी तरफ सर रख कर 'يَا شَهِيْدُ' २१ मर्तबह पढ़ कर दम करे । इन्शाअल्लाह सात दिनमें उसकी इस्लाह हो जाएगी ।

309 नाफरमान संतानकी इस्लाहका द्वितीय अमल

सुब्ह सवेरे नाफरमान संतानकी पेशानीके बाल पकड कर

('या जल् जलालि वल् इकरामि') पढ़ेगी तो इन्शाअल्लाह चंद दिनमें पतिकी निगाहमें उच्च स्थान प्राप्त कर लेगी ।

303 पतिकी निगाहमें उच्च स्थान प्राप्त करनेका द्वितीय अमल

जो पत्नी अपने पतिकी निगाहसे गिर गई हो वह :

- ७ (सात) दिन तक हररोज़ गुसल करे और दो रका'त नफल नमाज़ अदा करे ।
- दोनों रका'तोंमें सूरए 'फातिहा'के बा'द सूरए 'इख्लास' एक मर्तबह पढ़े ।
- तीन दिन हररोज़ खडे हो कर 'يَا عَزِيزُ' ('या अज़ीज़ु') ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह पढ़े ।
- चौथे दिन बैठ कर ५००० मर्तबह 'يَا عَزِيزُ' पढ़े ।
- पाँचवें, छटें और सातवें दिन बैठ कर सजदहमें जाकर कुल ३०० (तीन सो) मर्तबह ('या अज़ीज़ु') पढ़े और दुआ करे ।

वह पत्नी पतिकी नज़रमें इन्शाअल्लाह इज्ज़तपात्र और प्रिय बन जाएगी ।

304 पत्नीको फरमाँबरदार बनानेका अमल

सवेरे नाफरमान पत्नीके पेशानीके बाल पकड कर पति १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَا شَهِيدُ' ('या शहीदु') पढ़े तो इन्शाअल्लाह वह फरमाँबरदार हो जाएगी ।

305 बद सुलूक पति—पत्नीकी इस्लाहका अमल

● यह अमल उसके दिलको सब्र देगा । और अल्लाह तआला उसके गमको इन्शाअल्लाह भुला देगा ।

पडोसी, दोस्त और रिश्तेदार

313 पडोसीकी बुराईसे रक्षाका अमल

जुमेरातसे आरंभ करके ७ (सात) दिन तक हररोज़ सुब्ह और शाम ७० (सत्तर) मर्तबह 'حَسْبِىَ اللّٰهُ الْحَسِيْبُ' पढ़नेसे इन्शाअल्लाह पडोसीकी बुराईसे और हर बलासे सुरक्षित रहेगा ।

314 किसीको दोस्त बनानेका अमल

किसी मीठी चीज़ पर ३२० मर्तबह 'يَا قُدُّوْسُ' पढ़ कर खिलानेसे खानेवाला इन्शाअल्लाह दोस्त बन जाएगा ।

315 किसीके दिलमें मुहब्बत पैदा करनेका अमल

'يَا رَحِيْمُ' ('या रहीमु') कागज़ पर लिख कर पानीमें घोल कर पिलाए तो पीनेवालेके दिलमें इन्शाअल्लाह लिखनेवालेकी मुहब्बत पैदा होगी । (इस शर्तके साथ कि जाइज़ मुहब्बत हो ।)

316 जाइज़ मुहब्बतके लिए अमल

जाइज़ मुहब्बतके लिए यह दुआ मुजर्रब है :

'اَللّٰهُمَّ يَا جَامِعَ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ'

317 रिश्तेदारसे मुलाक़ातका अमल

जिस व्यक्तिके रिश्तेदार बिखर गए हों वह चाश्तके समय

'يَـــا شَهِيْـــدُ' ('या शहीदु') १००० (एक हज़ार) मर्तबह पढ़े। इन्शाअल्लाह वह फरमाँबरदार बन जाएगा।

310 विद्यार्थीकी परिक्षाका परिणाम अच्छा आनेका अमल

अगर किसी विद्यार्थीको परिक्षाका परिणाम खराब आनेका भय हो तो वह तीन दिन तक बावुजू क़िब्लह रुख बैठ कर ११००० (ग्यारह हज़ार) मर्तबह 'يَا حَسِيْبُ' ('या हसीबु') एक ही बैठकमें पढ़े तो इन्शाअल्लाह परिणाम अच्छा आएगा।

311 संतानकी शादीके लिए अमल

जिस शख्सकी लडकी कंवारी हो और उसकी शादीके खर्चके लिए कोई रक़म न हो अथवा किसी जगहसे पयगाम आता न हो तो वह शख्स :

- ११ (ग्यारह) दिन तक हररोज़ इशाकी नमाज़के बा'द ११००० (ग्यारह हज़ार) मर्तबह 'يَا مُغْنِى' ('या मुग्नी') पढ़े।
- जुमेरातसे आरंभ करके इतवारके दिन खत्म करे।

इन्शाअल्लाह गयबसे इन्तिज़ाम हो जाएगा।

312 किसीकी मोतका रंज और गम दूर करनेका अमल

- किसीकी मोत अथवा दुर्घटनासे रंजीदह और गमगीन व्यक्तिको हररोज़ १००० (एक हज़ार)मर्तबह 'يَـا صَبُوْرُ' ('या सबूरु')पढ़ कर पानी पर दम करके पिलाए।

322 गुस्सावर और बद मिज़ाजकी इस्लाहका द्वितीय अमल

- किसी खानेकी चीज़ पर १०० (एक सो) मर्तबह 'يَا عَفُوٌّ' ('या अफुव्वु') पढ़ कर दम करे, वह खाना बद मिज़ाज पतिको खिलाए तो इन्शाअल्लाह मिज़ाज बिल्कुल नरम हो जाएगा ।
- इस अमलसे गुस्सावर शख्स खूद अपने मिज़ाजकी इस्लाह भी कर सकता है ।

323 बद मिज़ाजकी इस्लाहका तीसरा अमल

'يَا رَحْمٰنُ' ('या रहमानु') मुश्क और ज़ाफरानसे लिख कर बद अखलाक़ व्यक्तिके घरमें दफन कर दिया जाए तो उस व्यक्तिके मिज़ाज और अख्लाक़की इन्शाअल्लाह इस्लाह हो जाएगी ।

324 ज़बान पर क़ाबू प्राप्त करनेके लिए अमल

जिस व्यक्तिकी ज़बान पर गाली और बुरे शब्द अधिक आते हों और किसी भी तरह अपनी ज़बान पर क़ाबू न रख सकती हो वह व्यक्ति ९० (नव्वे) मर्तबह नए प्याले पर 'يَا حَمِيْدُ' ('या हमीदु') लिखे और ९० (नव्वे) मर्तबह 'يَا حَمِيْدُ' ('या हमीदु') लिख कर प्याले पर दम करे और हमेशा इस प्यालेसे पानी पीता रहे तो इन्शाअल्लाह वह अवश्य अपनी ज़बान पर क़ाबू पा लेगा ।

इज्जत, आबरू, मर्तबह प्राप्त करनेके लिए

गुसल करके आसमानकी तरफ मुंह करके १० (दस) मर्तबह 'يَـا جَامِعُ' ('या जामिउ') पढ़े और एक उँगली बंद कर ले, इसी तरह हर १० (दस) मर्तबह पर एक उँगली बंद करता जाए, अंतमें दोनों हाथ मुंह पर फेर ले । इन्शाअल्लाह सब जल्द जमा हो जाऐंगे ।

318 लोगोंको ता'बेदार बनानेका अमल

जो व्यक्ति 'يَا مُؤْمِنُ' 'को १००१ मर्तबह पूरी उम्र पढ़ता रहे तो इन्शाअल्लाह सब लोग उसके ता'बेदार बन जाऐंगे ।

बुरी आदतें, बुरे अख्लाक़, बदमिज़ाजी आदिकी इस्लाह

319 शराबी पतिकी इस्लाहका अमल

शराबका आदी, व्यभिचारी हररोज़ 'يَا بَرُّ' ७ मर्तबह पढ़े तो उसके दिलसे उन गुनाहोंकी रगबत इन्शाअल्लाह जाती रहेगी ।

320 तमाम बुरी आदतोंकी इस्लाहका अमल

मुसल्सल ४५ (पैंतालीस) दिन तक हररोज़ ९३ (तीरानवें) मर्तबह एकांतमें 'يَـا حَـمِيْـدُ' ('या हमीदु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह तमाम बुरी आदतें दूर हो जाएगी और अच्छे अख्लाक़ पैदा होंगे ।

321 बद मिज़ाजकी इस्लाहका प्रथम अमल

अगर कोई शख्स बद मिज़ाज हो और खूद अपना मिज़ाज ठीक करना चाहता हो तो वह हररोज़ सुब्ह और शाम ३०० मर्तबह 'يَا رَؤُوْفُ' पढ़े । इन्शाअल्लाह २१ दिनमें इस्लाह हो जाएगी ।

330 बाइज़्ज़त बननेका प्रथम अमल

जो शख्स हमेशा जुम्अह अथवा पीरके दिन मगरिबकी नमाज़के बा'द ४० (चालीस) मर्तबह 'يَا مُعِزُّ' ('या मुइज़्ज़ु') पढ़े, वह इन्शाअल्लाह लोगोंकी नज़रोंमें रोबदार और बाइज़्ज़त बनेगा ।

331 बाइज़्ज़त बननेका द्वितीय अमल

'يَا حَلِيْمُ' ('या हलीमु') अधिक मात्रामें पढ़नेवाले अमीरका दबदबा और इज़्ज़त इन्शाअल्लाह बाक़ी रहेगी ।

332 दो बारह इज़्ज़त प्राप्त करनेका अमल

जो शख्स हररोज़ ३००० मर्तबह 'يَا عَلِيُّ' का विर्द करे, उसको इन्शाअल्लाह इज़्ज़त और आबरू दो बारह प्राप्त होगी ।

333 दोनों जहाँमें इज़्ज़तके लिए अमल

हररोज़ ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह 'يَا شَكُوْرُ' ('या शकूरु')का ज़िक्र करनेवालेको दुनियामें इन्शाअल्लाह बेहद इज़्ज़त और आखिरतमें बडा मर्तबह प्राप्त होगा ।

334 इज़्ज़त और अज़मत प्राप्त करनेका अमल

'يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ' अधिक मात्रामें पढ़नेसे बुजुर्गी और अज़मत इन्शाअल्लाह नसीब होगी ।

335 बाइज़्ज़त रहनेका अमल

जो शख्स 'يَا مَلِكُ' ('या मलिकु') हमेशा ३००० (तीन

325 इज़्ज़त प्राप्त करने और मुहताजीसे बचनेका प्रथम अमल

४० (चालीस) दिन तक हररोज़ ४० (चालीस) मर्तबह 'يَـا عَـزِيْـزُ' ('या अज़ीज़ु') पढ़नेसे अल्लाह उसको दुनियामें बाइज़्ज़त करेगा और इन्शाअल्लाह किसीका मुहताज नहीं रहेगा ।

326 इज़्ज़त प्राप्त करने और मुहताजीसे बचनेका द्वितीय अमल

जो शख्स हररोज़ फजरकी नमाज़के बा'द ४१ (एकतालीस) मर्तबह 'يَـا عَـزِيْزُ' ('या अज़ीज़ु') पढ़े, इन्शाअल्लाह किसीका मुहताज नहीं बनेगा और हमेशा इज़्ज़त पाएगा ।

327 बाइज़्ज़त बननेके लिए अमल

हररोज़ 'يَـا كَـرِيْـمُ' ('या करीमु') पढ़ कर सोनेसे अल्लाह तआला लोगोंकी नज़रोंमें बाइज़्ज़त बनाएगा ।

328 इज़्ज़त और वक़ार प्राप्त करनेका अमल

'يَا عَظِيْمُ' ('या अज़ीमु') अधिक मात्रामें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह शांति, इज़्ज़त और अज़मत नसीब होगी ।

329 इज़्ज़त और उच्च मर्तबह प्राप्त करनेका अमल

'يَـا مُتَكَبِّـرُ' ('या मुतकब्बिरु') अधिक मात्रामें पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह इज़्ज़त और उच्च मर्तबह पाएगा ।

आखिरु') ४१ (एकतालीस) मर्तबह पढ़े तो इन्शाअल्लाह उसकी इज़्ज़त होगी और बडा मर्तबह प्राप्त होगा ।

340 लोगोंकी नज़रमें इज़्ज़तके लिए प्रथम अमल

जो शख्स 'يَــا رَؤُوْفُ' ('या रऊफु') आधी रातको अथवा बराबर दोपहरके समय १०० (एक सो) मर्तबह पढ़े, इन्शाअल्लाह लोगोंकी नज़रमें बाइज़्ज़त बन जाएगा ।

341 लोगोंकी नज़रमें इज़्ज़तके लिए द्वितीय अमल

जो शख्स पीर और जुमेरातकी रातको मगरिबकी नमाज़के बा'द १४० (एक सो चालीस) मर्तबह 'يَا مُعِزُّ' ('या मुइज़्ज़ु') पढ़े, वह लोगोंकी निगाहमें हैबत और इज़्ज़त प्राप्त करेगा और इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआलाके सिवा किसीसे नहीं डरेगा ।

342 लोगोंकी नज़रमें इज़्ज़तके लिए तीसरा अमल

जो शख्स हररोज़ ज़ोहरकी नमाज़के बा'द ९ (नव) मर्तबह 'يَــا حَلِيْـمُ' ('या हलीमु') पढ़े, वह हमेशा लोगोंमें बाइज़्ज़त बन कर रहेगा । इन्शाअल्लाह कभी किसी शख्सके सामने बेइज़्ज़ती और शरमिंदगी नहीं उठानी पडेगी ।

343 लोगोंकी नज़रमें इज़्ज़तके लिए चोथा अमल

हज़ार) मर्तबह पढ़े, वह दुनियावालोंकी नज़रमें इन्शाअल्लाह इज़्ज़तवाला और साहिब मर्तबह रहेगा ।

336 इज़्ज़त और मर्तबह प्राप्त करनेका प्रथम अमल

जो शख्स रातको बिस्तर पर लेटे और 'يَـا كَـرِيْـمُ' ('या करीमु') पढ़ते पढ़ते सो जाए तो उसकी इज़्ज़त और मर्तबहके लिए फरिश्ते दुआ करेंगे और सुब्हको लोगोंकी निगाहमें इन्शाअल्लाह वह बहुत ही बडा और बुज़ुर्ग मा'लूम होगा । हज़रत अली कर्रमल्लाह वज्हहू ('या करीमु')को अधिक मात्रामें पण्हा करते थे ।

337 इज़्ज़त और मर्तबह प्राप्त करनेका द्वितीय अमल

इज़्ज़त प्राप्त करनेके लिए फजरकी नमाज़के बा'द ९९ (निनानवे) मर्तबह 'يَا مَجِيْدُ' ('या मजीदु') पढ़ना और फिर अपने शरीर पर दम करना इन्शाअल्लाह अत्यंत फायदाकारक है ।

338 किसीकी मुलाक़ातके लिए जाए तो वह इज़्ज़त करे उसके लिए अमल

जो शख्स 'يَـا اَحَـدُ' ('या अ–हदु') ९ (नव) मर्तबह पढ़ कर किसी कामके लिए अथवा किसीकी मुलाक़ातके लिए जाए तो वह उसको बडी इज़्ज़त भरी नज़रसे देखेगा ।

339 पराए लोगोंमें इज़्ज़त प्राप्त करनेका अमल

जो शख्स किसी पराए लोगोंमें जाए और 'يَـا آخِـرُ' ('या

348 लोगोंमें दबदबा और डर जमानेका प्रथम अमल

हररोज़ ३००० मर्तबह 'يَا كَبِيْرُ' ('या कबीरु') पढ़नेवालेका इन्शाअल्लाह लोगोंके दिलोंमें रोब और डर पैदा होगा ।

349 लोगोंमें दबदबा और डर जमानेका द्वितीय अमल

जो शख्स चाँदीकी अँगूठी पर 'يَا جَبَّارُ' ('या जब्बारु') कन्दह (अंकित) करके पहने, उसकी हैबत, रुअब, दबदबा और डर लोगोंकी निगाहमें इन्शाअल्लाह पैदा होगा ।

350 मख्लूक़को ता'बेदार बनानेका प्रथम अमल

जो शख्स जुम्अहके दिन अथवा जुम्अहकी रातको रोटीके २० टुकडों पर 'يَا عَدْلُ' लिख कर खाएगा तो इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआला मख्लूक़को उसकी ता'बेदार बना देगा ।

351 मख्लूक़को ता'बेदार बनानेका द्वितीय अमल

जो शख्स रोटीके २० टुकडों पर 'يَا مُحْصِىُ' पढ़ कर दम करके खाए तो इन्शाअल्लाह मख्लूक़ उसकी ता'बेदार बन जाएगी ।

352 जीवनमें हर प्रकारकी प्रगतिके लिए अमल

जो शख्स हररोज़ १०११ (एक हज़ार ग्यारह) मर्तबह 'يَا عَظِيْمُ' ('या अज़ीमु') पढ़े, वह इन्शाअल्लाह दोस्त और दुश्मन

जो शख्स हररोज़ 'يَا مَالِكَ الْمُلْكِ' ('या मालिकल् मुल्कि')को ७००० मर्तबह पढ़े और पूरा जीवन पढ़नेका इरादा कर ले, वह शख्स इन्शाअल्लाह मालदार, बावक़ार और बाइज़्ज़त हो कर जीवन गुज़ारेगा, कोई उसकी इज्ज़त पर हमला नहीं करेगा ।

344 लोगोंका महबूब बननेके लिए अमल

जो शख्स हररोज़ 'يَا بَاطِنُ' ('या बातिनु') १०२१ (एक हज़ार इक्कीस) मर्तबह इशाकी नमाज़के बा'द अंधेरेमें बैठ कर पढ़े, वह इन्शाअल्लाह लोगोंका प्रिय बन जाएगा ।

345 इज्ज़त, वक़ारमें वृद्धिके लिए प्रथम अमल

हररोज़ 'يَا مَلِكُ' ('या मलिकु') पढ़नेवालेकी इज्ज़त, अज़मतमें इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआला वृद्धि करेगा ।

346 इज्ज़त, वक़ारमें वृद्धिके लिए द्वितीय अमल

जो शख्स मुश्क और ज़ाफरानसे 'يَا جَلِيلُ' ('या जलीलु') लिख कर अपने पास रखे अथवा अधिक मात्रामें इसका विर्द रखे तो इन्शाअल्लाह मख्लूक़के दिलोंमें उसका रोब पैदा होगा और उसकी इज्ज़त और अज़मतमें इन्शाअल्लाह वृद्धि होगी ।

347 लोगोंकी निगाहमें इज्ज़त पैदा करनेका अमल

हमेशा इशाकी नमाज़के बा'द ३००० मर्तबह 'يَا مَاجِدُ' पढ़ना यह लोगोंकी नज़रमें इज्ज़त और क़द्र पैदा करता है ।

मर्तबह 'يَـــا رَافِـعُ' ('या राफिउ') पढ़नेवालेको अल्लाह तआला इन्शाअल्लाह मख्लूक़से बेनियाज़ और तवंगर बना देगा ।

358 तवंगर और बेनियाज़ बननेका अमल

जो शख्स 'يَـا مَـالِكَ الْـمُلْكِ'को हमेशा पढ़ता रहेगा अल्लाह तआला उसको लोगोंसे बेनियाज़ फरमा देंगे ।

359 तवंगर होनेका अमल

जुमेरातके दिन अथवा जुम्अहकी रातको १९००० (उन्नीस हज़ार) मर्तबह 'يَا غَنِيُّ' ('या गनिय्यु') पढ़ना और हमेशा यह अमल करते रहना, इन्सानको गयूबसे तवंगर और घनवान बना देता है लेकिन अल्लाह तआलाके फज़्लकी हर कामोंमें आवश्यकता है ।

360 ज़ाहिरी और बातिनी दौलतका अमल

- जो शख्स आरंभ और अंतमें ११ मर्तबह दुरूद शरीफ पढ़ कर ११११ मर्तबह 'يَـا مُغْنِيُ' पढ़ेगा उसको इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआला ज़ाहिरी और बातिनी गिना (दौलत) अर्पण फरमाऐंगे ।
- फजर अथवा इशाकी नमाज़के बा'द पढ़े, और उसके साथ सूरए 'मुज़ज़्म्मिल' भी पढ़े ।

मक़सद, काम और दुआकी कुबूलियतके लिए

361 काममें आसानीका प्रथम अमल

जिस व्यक्तिका कोई काम पूर्ण न होता हो वह 'يَا حَـكِيْمُ' को पाबंदीसे पढ़ा करे, इन्शाअल्लाह उसका काम पूर्ण हो जाएगा ।

सबकी नज़रमें प्रिय और बाइज़्ज़त बनेगा ।

353 मख़्लूक़के साथ आपसमें महरबान होनेका अमल

'يَا رَؤُوْفُ' ('या रऊफु') पढ़नेवाले शख्स पर इन्शाअल्लाह मख़्लूक़ महरबान होगी और मख़्लूक़ पर वह शख्स महरबान होगा ।

तवंगर और बेनियाज़ होनेके लिए

354 ज़ाहिरी और बातिनी बेनियाज़ीका अमल

जो शख्स अधिक मात्रामें 'يَا وَاسِعُ' का विर्द रखेगा, इन्शाअल्लाह उसे ज़ाहिरी और बातिनी बेनियाज़ी नसीब होगी ।

355 मख़्लूक़से बेनियाज़ीका अमल

जो शख्स सवेरे सजदहमें सर रख कर 'يَا صَمَدُ' ('या स–मदु') ११५ (एक सो पंद्रह) अथवा १२५ (एक सो पच्चीस) मर्तबह पढ़े, उसे इन्शाअल्लाह ज़ाहिरी और बातिनी सच्चाई नसीब होगी और इन्शाअल्लाह मख़्लूक़से बेनियाज़ी नसीब होगी ।

356 बेनियाज़ बननेके लिए अमल

जो शख्स हररोज़ चाश्तकी नमाज़के बा'द आसमानकी तरफ हाथ उठा कर १० मर्तबह 'يَا بَاسِطُ' पढ़ कर हाथ मुंह पर फेरेगा वह इन्शाअल्लाह बेनियाज़ बनेगा और किसीका मुहताज न होगा ।

357 बेनियाज़ी प्राप्त होनेका अमल

हर महीनेकी चोदहवीं रातको आधी रातको १०० (एक सो)

पढ़नेसे इन्शाअल्लाह हर मुश्किल काम आसान हो जाएगा ।

367 हर मुश्किल काममें आसानीका चौथा अमल

- हर मुश्किल काममें २१००० (इक्कीस) हज़ार मर्तबह 'يَا قَيُّوْمُ' ('या क़य्यूमु') तीन दिन तक पढ़ना अत्यंत मुजर्रब अमल है ।
- एक व्यक्ति यह खत्म पढ़े अथवा तीन व्यक्ति पढ़े ।
- तीन व्यक्तिसे अधिक न पढ़े ।
- तीन दिनमें ६३००० (त्रेसठ हज़ार) मर्तबह पढ़ा जाए ।
- अल्लाह तआलाके फज़्लसे इस मुद्दतमें तमाम मुश्किलात इन्शाअल्लाह दूर हो जाएगी ।

368 हर मुश्किल काममें आसानीका पाँचवाँ अमल

जो शख्स हररोज़ १०० मर्तबह 'يَا مُؤَخِّرُ' पढ़े, उसके तमाम कामकी ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला खूद ले लेगा । उसके मुश्किलसे मुश्किल काम गय्बसे इन्शाअल्लाह आसान हो जाऐंगे ।

369 हर मुश्किल काममें आसानीका छठा अमल

किसी मुश्किलीके समय ९००० मर्तबह 'يَا مُتَعَالِي' एक ही बैठकमें पढ़ना अत्यंत ही मुजर्रब साबित हुवा है ।

370 मक़सदमें कामियाबीका प्रथम अमल

किसी खास और जाइज़ मक़सदके लिए ७०० मर्तबह 'يَا مُقْسِطُ' पढ़ेगा तो इन्शाअल्लाह वह मक़सद प्राप्त होगा ।

362 काममें आसानीका द्वितीय अमल

जो शख्स सो कर उठनेके बा'द अधिक मात्रामें 'يَا مُقْتَدِرُ' ('या मुक़तदिरु')का विर्द करे तो इन्शाअल्लाह उसके तमाम काम आसान हो जाऐंगे ।

363 तमाम हाजतें पूरी होनेका अमल

दो रका'त नमाज़ पढ़ कर 'هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ' पढ़ते रहनेसे इन्शाअल्लाह तमाम हाजतें पूर्ण होगी ।

364 हर मुश्किल काममें आसानीका प्रथम अमल

जो शख्स जुम्अहकी नमाज़से पहले पाकी, सफाई और दिली शांतिके साथ १०० (सो) मर्तबह 'يَا اَللّٰهُ' पढ़े तो अल्लाह तआला उसके तमाम काम इन्शाअल्लाह आसान फरमा देगा ।

365 हर मुश्किल काममें आसानीका द्वितीय अमल

'يَا تَوَّابُ' ('या तव्वाबु') अधिक मात्रामें पढ़नेवालेके तमाम काम इन्शाअल्लाह आसान हो जाऐंगे ।

366 हर मुश्किल काममें आसानीका तीसरा अमल

जुहरकी नमाज़के बा'द ९० मर्तबह 'يَا حَكِيْمُ' ('या हकीमु')

(पाँच सो) अथवा १०० (एक सो) अथवा ५० (पचास) मर्तबह 'يَا سَمِيْعُ' पढ़ेगा तो इन्शाअल्लाह उसकी दुआऐं कुबूल होगी ।

377 दुआ कुबूल होनेका चौथा अमल

पीरकी रातको गुसल करके मुंह आसमानकी तरफ उठा कर १४१ (एक सो इकतालीस) मर्तबह 'يَا مُتَعَالِيُ' ('या मुतआली') पढ़ कर जो दुआ माँगेगा वह इन्शाअल्लाह कुबूल होगी ।

378 हर कामकी कामियाबीका प्रथम अमल

कामके आरंभमें 'يَا مُتَكَبِّرُ' ('या मुतकब्बिरु') अघिक मात्रामें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह सफलता होगी ।

379 हर कामकी कामियाबीका द्वितीय अमल

- 'يَا حَلِيْمُ، يَا عَلِيْمُ، يَا عَلِيُّ، يَا عَظِيْمُ' का १५१००० मर्तबह खत्म करनेसे उसी हफतेमें इन्शाअल्लाह सफलता होगी ।
- सामान्य आवश्यकताके लिए १००० (एक हज़ार) मर्तबह पढ़ कर दुआ करना भी काफी है ।

380 हर कामकी कामियाबीका तीसरा अमल

जो व्यक्ति ९ मर्तबह 'يَا اَحَدُ' पढ़ कर जिस कामके इरादहसे जाएगा वह काम इन्शाअल्लाह आसानीसे हो जाएगा ।

381 हर कामकी कामियाबीका चौथा अमल

जो व्यक्ति आघी रातको खडी हो कर ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह 'يَا مُنْتَقِمُ' ('या मुन्तक़िमु') पढ़े तो जिस जाइज़

371 मक़्सदमें कामियाबीका द्वितीय अमल

जो शख्स खाली कूज़हमें ७ मर्तबह 'يَا مُقِيْتُ' पढ़ कर दम करेगा और उसमें खूद पानी पीएगा अथवा किसी दूसरेको पिलाएगा अथवा सूँघेगा तो इन्शाअल्लाह मक़्सदमें सफलता प्राप्त होगी ।

372 मक़्सदके मुताबिक़ काम होनेका अमल

किसी भी कामके आरंभके समय ४१ मर्तबह 'يَا نَافِعُ' ('या नाफिउ') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह वह काम मक़्सदके मुताबिक़ होगा ।

373 खास हाजत पूर्ण होनेका अमल

कोई खास हाजत पेश आए तो घर अथवा मस्जिदके सहनमें तीन मर्तबह सजदह करके हाथ उठाए और १०० मर्तबह 'يَا وَهَّابُ' पढ़े । इन्शाअल्लाहु तआला हाजत पूर्ण हो जाएगी ।

374 दुआ कुबूल होनेका प्रथम अमल

जो व्यक्ति हररोज़ ५०० मर्तबह 'يَا خَافِضُ' पढ़ा करे, इन्शाअल्लाह उसकी हाजतें पूर्ण होगी और मुश्किलात दूर होगी ।

375 दुआ कुबूल होनेका द्वितीय अमल

जो व्यक्ति 'يَا مُجِيْبُ' को अधिक मात्रामें पढ़ा करे तो इन्शाअल्लाह उसकी दुआऐं बारगाहे खुदावंदीमें कुबूल होने लगेगी ।

376 दुआ कुबूल होनेका तीसरा अमल

जो शख्स जुमेरातके दिन चाश्तकी नमाज़के बा'द ५००

386 गुम हूई चीज़की वापसीका चौथा अमल

अगर कोई चीज़ गुम हो जाए तो यह दुआ पढ़े, इन्शाअल्लाह वह मिल जाएगी ।

'اَللّٰهُمَّ يَاجَامِعَ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّارَيْبَ فِيْهِ، اِجْمَعْ ضَآلَّتِیْ'

('अल्लाहुम्म या जामिअन्नासि लि यव्मिल् ला रय्–ब फीहि, इज्मअ् ज़ाल्लती')

387 गुम हूई चीज़की वापसीका पाँचवाँ अमल

'يَـا مَـالِكَ الْـمُلْكِ' ('या मालिकुल् मुल्कि') १०००० (दस हज़ार) मर्तबह पढ़नेसे इन्शाअल्लाह गुम हूई चीज़ वापस मिल जाएगी अथवा दिलको सब्र और शांति हो जाएगी ।

388 गुम हूई चीज़की वापसीका छठा अमल

इशाकी नमाज़के बा'द ७००० मर्तबह 'يَـــا مُـعِـيْـدُ' ('या मुईदु') पढ़नेसे इन्शाअल्लाह गुम हुवा सामान वापस मिल जाएगा ।

389 चोरीसे रक्षाका अमल

रातको सोते समय ७००० (सात हज़ार) मर्तबह 'يَا رَقِيْبُ' ('या रक़ीबु') पढ़ कर दम करनेसे रातको घरमें चोर नहीं आएगा ।

390 चोरी हुवे मालकी वापसीका अमल

एक कागज़के चारों कोनोंमें 'يَا حَقُّ' ('या हक़्क़ु') लिख कर उसके बीचमें गुम हुवा सामानका नाम लिख कर आधी रातको उस

मुरादके लिए पढ़ेगा वह मुराद इन्शाअल्लाह पूर्ण होगी ।

382 हर कामकी कामियाबीका पाँचवाँ अमल

जो व्यक्ति हररोज़ इशाकी नमाज़के बा'द 'يَـــا بَـــدِيْـــعَ الْعَجَائِبِ بِالْخَيْرِ يَا بَدِيْعُ' १२ दिन तक १२०० मर्तबह जिस काम अथवा मक़्सदके लिए पढ़ेगा, इन्शाअल्लाह वह पूरा अमल खत्म होनेसे पहले प्राप्त हो जाएगा । यह अमल मुजर्रब है ।

गुम हो जाना अथवा चोरी हो जाना

383 गुम हूई चीज़की वापसीका प्रथम अमल

'يَـــا رَقِيْـــبُ' ('या रक़ीबु')को अधिक मात्रामें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह गुम हूई चीज़ प्राप्त हो जाएगी ।

384 गुम हूई चीज़ अथवा व्यक्तिकी वापसीका द्वितीय अमल

काग़ज़के चारों कोनों पर 'اَلْحَقُّ' ('अल् हक़्क़ु') लिख कर सवेरे काग़ज़को हथेली पर रख कर आसमानकी तरफ बुलंद करके दुआ करे, इन्शाअल्लाह गुम हूई व्यक्ति अथवा सामान मिल जाएगा और इन्शाअल्लाह नुक़्सानसे सुरक्षित रहेगा ।

385 गुम हूई व्यक्तिकी वापसीका तीसरा अमल

जब घरकी सब व्यक्ति सो जाऐं तब घरके चारों कोनोंमें ७० मर्तबह 'يَا مُعِيْدُ' पढ़े तो इन्शाअल्लाह गुम हूई व्यक्ति वापस आ जाएगी अथवा वह कहाँ है उसका पता चल जाएगा ।

394 प्रवासमें रक्षाका तीसरा अमल

- मुबारक नाम 'اَللّٰهُ' ('अल्लाहु')को बडे अक्षरोंमें लिखे ।
- इसके बा'द उसके 'अलिफ' अक्षरको कैंचीसे काट कर जुदा करे ।
- प्रवासी अपने बाज़ू पर यह कटा हुवा अक्षर बांध ले ।
- बाक़ी नाम 'لّٰهُ' ('अल्लाह') अपने घरमें बाल–बच्चोंमें अमानत रख जाए ।

इन्शाअल्लाह प्रवासी सहीह–सलामत अपने घर वापस आएगा ।

395 प्रवासमें रक्षाका चौथा अमल

प्रवासमें जाते समय अपने परिवारको एक जगह जमा करके ७ (सात) मर्तबह 'يَـا رَقِيْبُ' ('या रक़ीबु') पढ़ कर सब पर दम करे तो अल्लाह तआला सबकी रक्षा करेगा । और प्रवासीके साथ तमामको जीवंत सलामतीके साथ मुलाक़ात कराएगा ।

396 प्रवासमें रक्षाका पाँचवाँ अमल

- अगर कश्ती अथवा बडे जहाज़के प्रवासमें हवाके तूफानका भय हो,
- अथवा किसी मकानमें आग लगनेका भय हो तो
- हररोज़ १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَا وَكِيْلُ' ('या वकीलु') पढ़े।

इन्शाअल्लाह तमाम आफतोंसे अमन (रक्षा) मिलेगा ।

397 प्रवासमें रक्षाका छठा अमल

प्रवासमें जाते समय १०१ (एक सो एक) मर्तबह 'يَـا آخِرُ' ('या आखिरु') पढ़ कर खूदको और अपने परिवारको अल्लाह

कागज़को हथेली पर रख कर आसमानकी तरफ हाथ उठा कर निम्न लिखित दुआ करनेसे इन्शाअल्लाह चोरी हुवा सामान मिल जाएगा :

'इलाही ! हज़रत सय्यिदुल् मुरसलीन अलयहिस्सलामके तुफैल मेरा सामान मुजे मिल जाए ।'

391 चोरी हूई अथवा गुम हूई चीज़ वापस प्राप्त करनेका अमल

● पहले २१ (इक्कीस) मर्तबह यह पढ़े :

'يَا جَامِعُ الْمُتَفَرِّقِنَا اِجْمَعْ لِیْ ضَالَّتِیْ يَا جَامِعُ'

('या जामिउल् मु—तफर्रिकि़ना इज़्मअ् ली ज़ाल्लती या जामिउ')

● फिर ३००० मर्तबह मात्र 'يَا جَامِعُ' ('या जामिउ') पढ़े । इन्शाअल्लाह गुम हूई अथवा चोरी हूई चीज़ वापस प्राप्त हो जाएगी ।

प्रवास और प्रवासी

392 प्रवासमें रक्षाका प्रथम अमल

प्रवासी प्रवासमें 'يَا قُدُّوْسُ' ('या कुद्दुसु') अधिक मात्रामें पढ़े । इन्शाअल्लाह लाचार और विवश नहीं होगा और सहीह तथा सलामतीके साथ मंज़िल पर पहूँच जाएगा ।

393 प्रवासमें रक्षाका द्वितीय अमल

प्रवासी जुम्अहके दिन १००० मर्तबह 'يَا اَوَّلُ' पढ़े, इन्शाअल्लाह जल्द खैरियतके साथ वतन वापस पहूँचेगा ।

पानीके खाली बरतनमे प्रवासी ७ (सात) मर्तबह 'يَا مُقِيتُ' ('या मुक़ीतु') पढ़ कर दम करे और उसमें खूद पानी पीए अथवा किसी दूसरेको पिलाए अथवा उस पानीको सूँघे तो प्रवासकी भयानकतासे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा।

403 प्रवाससे रक्षाके साथ वतन वापसीका अमल

प्रवासी हररोज़ ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह 'يَا عَلِيُّ' ('या अलिय्यु')का विर्द रखेगा तो इस प्रवाससे अपने वतन इन्शाअल्लाह सहीह–सलामतीके साथ वापस पहूँचेगा।

404 प्रवासमें तमाम काम दुरुस्त होनेका अमल

प्रवासमें जाते समय ११ मर्तबह 'يَا هَادِىُ' पढ़ना अत्यंत ही फायदाकारक है।इन्शाअल्लाह तमाम काम दुरुस्त रहेंगे।

405 समुद्री प्रवासमें रक्षाका प्रथम अमल

समुद्री प्रवासका प्रवासी ७ (सात) मर्तबह 'يَا حَفِيظُ' ('या हफीज़ु') लिख कर अपनी दाई बाजू पर बांधे, इन्शाअल्लाह वह तूफानसे, डूबनेसे और अन्य तमाम आफतोंसे सुरक्षित रहेगा।

406 समुद्री प्रवासमें रक्षाका द्वितीय अमल

समुद्री प्रवासमें प्रवासी 'يَا نَافِعُ' अधिक मात्रामें पढ़ता रहे तो वह डूबनेसे अथवा तूफानसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा।

तआलाके हवाले करे ।इन्शाअल्लाह खैरियतसे घर वापस आएगा
और सबको जीवंत और सलामत पाएगा ।

398 प्रवासमें रक्षाका सातवाँ अमल

रेलगाडी, कश्ती अथवा बडे जहाज़ आदिमें सवार होते
समय ७ (सात) मर्तबह 'يَـا بَرُّ' ('या बर्रु') पढ़े तो तमाम आफतोंसे
सलामत रहेगा और इन्शाअल्लाह सलामतीके साथ सवारीसे उतरेगा।

399 प्रवासमें रक्षाका आठवाँ अमल

रातको १००० मर्तबह 'يَـا مُعِـزُّ' ('या मुइज़्ज़ु') पढ़ कर
किसी जगह प्रवासमें जाए तो कोई तकलीफ देनेवाली बात सामने
नहीं आएगी ।और पूरे प्रवासमें अत्यंत ही बावक़ार और बाइज़्ज़त
रहेगा ।और इन्शाअल्लाह सलामतीके साथ घर वापस आएगा ।

400 प्रवासमें सामानकी रक्षाका प्रथम अमल

प्रवासके सामान पर तीन जगह 'يَا حَفِيْظُ' ('या हफीज़ु')के
अक्षर अलग अलग लिख दे ।इन्शाअल्लाह वह सामान कभी गुम
नहीं होगा और सहीह–सलामत मंज़िले मक़सूद तक पहूँच जाएगा ।

401 प्रवासमें सामानकी रक्षाका द्वितीय अमल

अगर प्रवासी अपने सामान पर १० (दस) मर्तबह 'يَا جَلِيْلُ'
('या जलीलु') पढ़ कर दम करे तो इन्शाअल्लाह उसका सामान
चोरके हाथसे सुरक्षित रहेगा ।

402 प्रवासकी भयानकतासे रक्षाका अमल

मर्तबह 'يَا رَزَّاقُ' ('या रज़्ज़ाक़ु') पढ़ कर दम करनेसे इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआला रोज़ीके दरवाज़े खोल देंगे ।

411 रोज़ीके दरवाज़े खुलनेका तीसरा अमल

४१ मर्तबह 'يَا شَكُوْرُ' पढ़नेसे इन्शाअल्लाह रोज़ीके दरवाज़े खुल जाएंगे और आर्थिक तंगी और रंज तथा गम दूर हो जाएगा ।

412 रोज़ीके दरवाज़े खुलनेका चौथा अमल

'يَا وَكِيْلُ' ('या वकीलु') अघिक मात्रामें पढ़नेसे इन्शाअल्लाह रोज़ी और भलाईके दरवाज़े खुलेंगे ।

413 रोज़ीके दरवाज़े खुलनेका पाँचवाँ अमल

हमेशा हररोज़ फजरकी नमाज़के बा'द १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَـــا وَهَّـــابُ' ('या वह्हाबु') पढ़नेसे कम मुद्दतमें रोज़ीके दरवाज़े इन्शाअल्लाह खुल जाऐंगे ।

414 रोज़ीकी तंगी दूर करनेका प्रथम अमल

'يَـا وَهَّـابُ' ('या वह्हाबु')को कागज़ पर लिख कर अपने पास रखनेवालेको रोज़ीकी तंगी नहीं होगी ।

415 रोज़ीकी तंगी दूर करनेका द्वितीय अमल

जो व्यक्ति आर्थिक तंगीसे लाचार हो गई हो वह व्यक्ति ४० (चालीस) दिन तक हररोज़ ५००० (पाँच हज़ार) मर्तबह 'يَـــا شَـكُـوْرُ' ('या शकूरु') पढ़े तो इन्शाअल्लाह गय्बसे ऐसा घनवान बन जाएगा कि खूद भी हैरतमें पड जाएगा ।

सातवाँ प्रकरण

रोज़ी, वेपार, कारोबार, नोकरी, कोर्ट और मुक़द्दमा

रोज़ी

407 रोज़ीमें बरकतका अमल

जो व्यक्ति १३३ (एक सो तेंतीस) मर्तबह 'يَا لَطِيْفُ' ('या लतीफु') पढ़ा करे इन्शाअल्लाह उसकी रोज़ीमें बरकत होगी और उसके सब काम अच्छी तरह पूर्ण होंगे ।

408 रोज़ी प्राप्त करनेका अमल

हररोज़ १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَـا اَللّٰـهُ يـا هُ' ('या अल्लाहु या हू')का ज़िक्र करनेवालेको अल्लाह तआला यक़ीनपूर्वक रोज़ी अर्पण फरमाएगा ।

409 रोज़ीके दरवाज़े खुलनेका प्रथम अमल

फजरकी नमाज़के बा'द ३०० (तीन सो) मर्तबह 'يَا وَهَّابُ' ('या वह्हाबु') पढ़े और आरंभ तथा अंतमें ११ (ग्यारह) मर्तबह दुरूद शरीफ पढ़ कर दुआ करे तो इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआला रोज़ीके दरवाज़े खोल देगा ।

410 रोज़ीके दरवाज़े खुलनेका द्वितीय अमल

फजरकी नमाज़से पहले अपने मकानके चारों कोनोंमें १०

420 गरीबी और निर्घनतासे मुक्तिका द्वितीय अमल

चाश्तकी नमाज़के अँतिम सजदहमें ४० मर्तबह 'يَا وَهَّابُ' पढ़नेसे गरीबी और निर्घनतासे इन्शाअल्लाह मुक्ति मिलेगी ।

421 गरीबी और निर्घनतासे मुक्तिका तीसरा अमल

दो रका'त नफल नमाज़ पढ़ कर अपने हेतु और मतलबको दिमागमें रख कर १०० (एक सो) मर्तबह 'يَـــا لَطِيْفُ' ('या लतीफु') पढ़नेवाला इन्शाअल्लाह निर्घनतासे मुक्ति पाएगा ।

422 गरीबी और बेकारी दूर होनेका अमल

जो शख्स गरीब और बेकार हो वह २१ दिन तक हररोज़ दो रका'त तहिय्यतुल् वुजू पढ़ कर ३०० मर्तबह 'يَـــا لَطِيْفُ' पढ़े तो इन्शाअल्लाह उसकी गरीबी और बेकारी दूर हो जाएगी ।

423 मोहताजीसे रक्षाका प्रथम अमल

जो शख्स हररोज़ फर्ज़ नमाज़के बा'द २१ मर्तबह 'يَا مُنْعِمُ' पढ़े, वह इन्शाअल्लाह कभी मोहताज और गरीब नहीं होगा ।

424 मोहताजीसे रक्षाका द्वितीय अमल

जो शख्स क्रमानुसार १० (दस) जुम्अह तक, जुम्अहके दिनकी फजरकी नमाज़के बा'द ७००० (सात हज़ार) मर्तबह 'يَـــا مُغْنِى' ('या मुग्नी') पढ़े तो गयबसे अल्लाह तआला उसे लोगोंकी

416 रोज़ीमें विशालताका अमल

रोज़ीकी विशालताके लिए हररोज़ इशाकी नमाज़के बा'द ५००० (पाँच हज़ार) मर्तबह 'يَا وَاسِعُ' ('या वासिउ') पढ़ता रहे। यह अत्यंत ही मुजर्रब अमल है।

417 रोज़ीमें उन्नतिका अमल

- अतूट हररोज़ सूरए 'मुज़्ज़म्मिल शरीफ' ११ मर्तबह पढ़े और
- ११०० (एक हज़ार एक सो) मर्तबह 'يَا مُغْنِىُ' ('या मुग्नी') पढ़े।
- आरंभ और अंतमें दूरूद शरीफ पढ़े।

रोज़ीमें उन्नतिके लिए अत्यंत ही मुजर्रब वज़ीफा है।

418 रोज़ी विशाल होनेका अमल

हमेशा जुम्अहकी नमाज़के बा'द १०० (एक सो) मर्तबह 'يَا غَفَّارُ' ('या गफ्फारु') पढ़नेवालेको इन्शाअल्लाह विशाल रोज़ी नसीब होगी।

गरीबी और मोहताजी दूर होनेके लिए

419 गरीबी और निर्घनतासे मुक्तिका प्रथम अमल

जो शख्स 'يَا وَهَّابُ' ('या वह्हाबु')को अघिक मात्रामें पढ़ेगा अथवा उसको लिख कर अपने पास रखेगा उसको गरीबी और निर्घनतासे हैरत अंगेज़ तरीक़े पर मुक्ति मिलेगी।

रहेगी । हर कारोबारमें इन्शाअल्लाह बरकत प्राप्त होगी ।

430 वेपारमें बरकतका अमल

हर नई चीज़ अथवा माल खरीदते समय पहले ४१ मर्तबह 'يَا نَافِعُ' पढ़नेसे इन्शाअल्लाह वेपारमें बहुत बरकत होगी ।

431 वेपारमें नुक़सानसे रक्षाका अमल

हररोज़ फजरककी नमाज़के बा'द ३००० मर्तबह 'يَا مُنْعِمُ' पढ़े तो इन्शाअल्लाह वेपारमें किसी प्रकारका नुक़सान नहीं होगा ।

432 वेपारमें नुक़सानसे रक्षाका अमल

दुकान, आफिस अथवा कारखाना ताला खोलनेसे पहले ७० (सत्तर) मर्तबह 'يَا غَنِيُّ' ('या गनिय्यु') पढ़े तो इन्शाअल्लाह वेपारके मालमें बरकत होगी । कभी नुक़सान नहीं होगा ।

433 वेपारमें भागीदारकी बुराईसे बचनेका अमल

वेपारके भागीदार हमेशा हररोज़ १००१ मर्तबह 'يَا مُؤْمِنُ' पढ़े तो पूरा जीवन वह एक दूसरेकी बुराईसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेंगे ।

नौकरी, पद

434 छूटी हूई नौकरी वापस प्राप्त करनेका अमल

जिस शख्सकी नौकरी छूट गई हो और वह चाहे कि उसको दो बारह नौकरी मिल जाए तो वह शख्स तीन रोज़ह रखे और फजरकी नमाज़के बा'द १०००० (दस हज़ार) मर्तबह 'يَا رَزَّاقُ' (या

मोहताजीसे बचाएगा और अपने खज़ानेसे सुकून दिलाएगा ।

425 भूखसे रक्षाका अमल

जो शख्स हररोज़ ३००० मर्तबह रोटीके चार लुक्मों पर 'يَا قَابِضُ' लिख कर खाएगा वह इन्शाअल्लाह भूखसे सुरक्षित रहेगा ।

426 गरीबी दूर होनेका प्रथम अमल

गरीब शख्स हररोज़ ३००० मर्तबह 'يَـــا عَـــلِـــىُّ' ('या अलिय्यु')का विर्द रखे तो वह इन्शाअल्लाह घनवान हो जाएगा ।

427 गरीबी दूर होनेका द्वितीय अमल

अगर कोई पहले घनवान था और फिर गरीब हो गया और वह यह चाहे कि उसकी पहले जैसी हालत दो बारह हो जाए तो २१ (इक्कीस) दिन तक 'يَـــا مُـعِـيْـدُ' ('या मुईदु') पढ़े । चंद दिनोंमें वही पहली हालत इन्शाअल्लाह फिर क़ाइम हो जाएगी ।

वेपार, कारोबार

428 कारोबारमें तरक्क़ीका प्रथम अमल

हररोज़ 'يَا رَشِيْدُ' ('या रशीदु')का विर्द रखनेसे इन्शाअल्लाह तमाम मुश्किलात दूर हो जाऐंगी और कारोबारमें खूब तरक्क़ी होगी।

429 कारोबारमें तरक्क़ीका द्वितीय अमल

फजरकी नमाज़के बा'द २९८ (दो सो अठ्ठानवे) मर्तबह 'يَا رَحْـــمٰـــنُ' ('या रहमानु') पढ़नेवाला अल्लाह तआलाकी खास रहमतमें दाखिल होगा और दुनियामें उसकी कोई मुश्किली नहीं

अगर कोई मुलाज़िम पदसे हटा दिया गया हो तो :

- ७ (सात) दिन तक हररोज़ गुसल करे ।
- उसके बा'द दो रका'त नफल नमाज़ अदा करे ।
- उन दोनों रका'तोंमें 'अल्हम्दु शरीफ' और सूरए 'इख़्लास' एक मर्तबह पढ़े ।
- फिर तीन दिन हररोज़ खडे हो कर ३००० मर्तबह 'يَا عَزِيْزُ' पढ़े।
- चौथे दिन बैठ कर ५००० मर्तबह 'يَا عَزِيْزُ' ('या अज़ीज़ु') पढ़े।
- पाँचवें, छठे, सातवें दिन सजदहमें जाकर ३०० (तीन सो) मर्तबह 'يَا عَزِيْزُ' ('या अज़ीज़ु') पढ़े ।
- उसके बा'द दुआ करे ।

इन्शाअल्लाह वोही पद वापस मिल जाएगा अथवा उससे बेहतर व्यवस्था गय्बसे हो जाएगी ।

439 मालिककी निगाहमें उच्च स्थान प्राप्त करनेका अमल

मुलाज़िम 'يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ' ('या ज़ल् जलालि वल् इकराम')को १००० मर्तबह हररोज़ पढ़े तो इन्शाअल्लाह २१ (इक्कीस) दिनमें मालिककी निगाहमें उच्च स्थान प्राप्त कर लेगा ।

440 गरीब आदमीका हदियह अमीरको पसंद आनेके लिए अमल

गरीब आदमी किसी अमीरको हदियह देनेसे पहले हदियहकी चीज़ पर ७० मर्तबह 'يَا حَمِيْدُ' पढ़ कर दम करे । इन्शाअल्लाह वह हदियह अत्यंत मक़्बूल और पसंद आएगा ।

रज़्ज़ाकु') पढ़े और आरंभमें तथा अंतमें यह दुरूद शरीफ पढ़े :

'اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ بَارِکْ وَسَلِّمْ'

उसी महीने, उसी जगह पर अथवा उससे बेहतर जगह पर इन्शाअल्लाह नौकरी मिल जाएगी ।

435 उच्च मर्तबह और खूशहाली प्राप्त करनेका प्रथम अमल

जो शख्स 'يَا عَلِيُّ' ('या अलिय्यु')को पढ़ता रहे और लिख कर अपने पास रखे, इन्शाअल्लाह उसे मर्तबहकी उच्वता, खूशहाली और हेतुमें सफलता नसीब होगी ।

436 छूटा हुवा पद वापस प्राप्त करनेका अमल

जो शख्स अपने पदसे हटा दिया गया हो वह ७ रोज़ह रख कर ७ दिन तक १००० मर्तबह 'يَا كَبِيْرُ' ('या कबीरु') पढ़े तो इन्शाअल्लाह वह दो बारह अपने पद पर नियुकत हो जाएगा ।

437 मुलाज़िमको पदमें इज्ज़त प्राप्त होनेका अमल

मुलाज़िम हररोज़ अंघेरेमें १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَا مَالِكُ يَا قُدُّوْسُ' दोनों नामोंको मिला कर पढ़े तो जिस पद पर वह मुलाज़िम है उसमें इन्शाअल्लाह इज्ज़त प्राप्त होगी । उसके ऊपरके अफसरान हमेशा उसकी तरफ दयाकी नज़रसे देखेंगे ।

438 छूटा हुवा पद वापस प्राप्त करनेका अमल

बहुत ही आसानीसे मालिकका डर दिलसे निकल जाएगा ।

445 बडे पद पर क़ाइम रहनेका अमल

जो हाकिम हमेशा ५००० (पाँच हज़ार) मर्तबह 'يَـا كَبِيْرُ' ('या कबीरु') पढ़ेगा वह अपने पद पर बाइज़्ज़त और बावक़ार क़ाइम रहेगा । अगर उस पर कोई बडी ज़िम्मेदारी आ जाएगी तो उसमें इन्शाअल्लाह सहीह और सलामत सफल होगा ।

446 हाकिमकी हुकूमत क़ाइम रहनेका अमल

जो हाकिम हररोज़ अंधेरेमें १००० (एक हज़ार) मर्तबह यह दोनों नाम 'يَـا مَـالِكُ يَـا قُدُّوْسُ' ('या मालिकु या कुद्दूसु') मिला कर पढ़े, उसकी हुकूमत इन्शाअल्लाह क़ाइम रहेगी ।

447 प्रजाकी ता'बेदारीके लिए हाकिमको करनेका अमल

अगर हाकिम 'يَـا مُـؤْمِنُ' ('या मुअ्मिनु')को अधिक मात्रामें पढ़ेगा तो इन्शाअल्लाह उसकी प्रजा ता'बेदार बन जाऐंगी ।

448 अमलदार और हाकिम बात सुने उसका अमल

जो शख्स हमेशा ३००० मर्तबह 'يَا مَلِكُ' ('या मलिकु') पढ़े तो अमलदार और हाकिम उसकी बात इन्शाअल्लाह घ्यानसे सुनेंगे । ज़ालिम उसके सामने सख्तीसे नहीं बोल सकेगा ।

कोर्ट और मुक़द्दमा

441 मालिककी नाराज़गी दूर करनेका अमल

अगर कोई मालिक मुलाज़िमसे नाराज़ रहता हो तो वह मुलाज़िम सुब्ह और शाम २१ (इक्कीस) मर्तबह 'يَا مَانِعُ' ('या मानिउ') पढ़ कर मालिककी तरफ आगेसे अथवा पीछेसे दम करे। इन्शाअल्लाह चंद ही दिनोंमें नाराज़गी दूर हो जाएगी।

442 मालिकका गुस्सा दूर करनेका अमल

अगर किसी मुलाज़िम पर उसका मालिक गुस्सा करता हो तो आधी रातको अथवा दोपहरको ११०१ (एक हज़ार एक सो एक) मर्तबह 'يَا صَبُوْرُ' ('या सबूरु') पढ़ कर अल्लाह तआलासे दुआ करे। इन्शाअल्लाह एक ही हफतेमें मालिकका गुस्सा दूर हो जाएगा।

443 मालिककी बदमिज़ाजीकी इस्लाहका अमल

किसी मुलाज़िमका मालिक बद मिज़ाज हो तो वह मुलाज़िम 'يَا وَلِيُّ' ('या वलिय्यु') पढ़ते पढ़ते मालिकके पास जाए तो इन्शाअल्लाह वह महरबानीका मुआमला करेगा।

444 मालिकका डर दिलसे दूर करनेका अमल

जो मुलाज़िम मालिककी पूछताछसे बहुत डरता हो वह रातको इशाकी नमाज़के बा'द ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह 'يَا حَسِيْبُ' ('या हसीबु') पढ़े और कल्पना करे कि मेरा मालिक अल्लाह तआलाके दरबारमें हिसाब देनेमें मसरूफ है और मुझे भूल गया है। यह अमल तीन दिन सतत करे। इन्शाअल्लाह

यह बंदह कहाँ जाएगा ?

'لَا مَلْجَأً وَلَا مَنْجَأً مِنَ اللّٰهِ اِلَّا اِلَيْكَ'

तेरी सज़ासे बचना और तेरी मुसीबतकी पनाह तेरे ही पास है ।''

इन्शाअल्लाह मुक़द्दमामें जीत होगी और दुश्मन पराजित होगा ।

451 मुक़द्दमा जीतनेके लिए तीसरा अमल

मुश्किल मुक़द्दमामें जीतनेके लिए 'يَا حَلِيْمُ، يَا عَلِيْمُ، يَا عَلِيُّ، يَا عَظِيْمُ' पढ़ना अत्यंत ही मुजर्रब है ।

452 मुक़द्दमामें समाधानके लिए अमल

अगर कोई शख्स किसी मुक़द्दमामें समाधान करना चाहता हो और सामनेवाले (विपक्ष) मानते न हो तो ज़ोहरकी नमाज़के बा'द ३००० मर्तबह 'يَا غَفَّارُ' ('या गफ्फारु') पढ़े और फिर दुआ करे । इन्शाअल्लाह दुश्मन खूद ही समाधानके लिए अरज करेगा ।

453 मुक़द्दमाका फेसला न्यायपूर्वक होनेका अमल

- १०१ मर्तबह 'سُبْحَانَ الْمَالِكُ الْحَقِّ الْمُبِيْنِ' पढ़े ।
- इसके बा'द ७००० मर्तबह 'يَا حَقُّ' ('या हक्कु') पढ़े ।

इन्शाअल्लाह मुक़द्दमाका फेसला हक़ पर और न्यायपूर्वक होगा ।

454 मुक़द्दमाकी अपीलमें जीतनेका अमल

'يَا مَالِكَ الْمُلْكِ' का खत्म निम्न लिखित रीतसे करे :

- हररोज़ गुसल करके अेहरामकी तरह चादर बांधे ।

449 मुक़द्दमा जीतनेके लिए प्रथम अमल

- नाहक़ मुक़द्दमामें फंसा आदमी हाज़रीके समय अथवा मुक़द्दमा दाइर करनेवालेके साथ बातचीतके समय ७० (सत्तर) मर्तबह **'اَللّٰهُ، اَللّٰهُ'** ('अल्लाहु, अल्लाहु') कहे ।
- दिलमें कल्पना करे कि तमाम मजलिस गाइब हो गई है और अब अल्लाह तआलाकी ज़ात इस मुक़द्दमाका फेसला करेगी ।

इन्शाअल्लाह मुक़द्दमाका फेसला उसके हक़में होगा । दुशमन पराजित होगा ।

450 मुक़द्दमा जीतनेके लिए द्वितीय अमल

नाहक़ मुक़द्दमा और दुश्मनके डरके कारण परेशान आदमी २१००० मर्तबह **'يَا مَالِكَ الْمُلْكِ'** ('या मालिकुल् मुल्क')का खतम तीन दिन सतत निम्न लिखित रीतसे करे :

- तीन शख्स बावुज़ू क़िब्लह रुख बैठ कर ७००० (सात हज़ार) मर्तबह **'يَا مَالِكَ الْمُلْكِ'** ('या मालिकुल् मुल्क') पढ़े ।
- आरंभ और अंतमें ७ (सात) मर्तबह यह दुरूद शरीफ पढ़े :

'اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى قَبْرِ مُحَمَّدٍ فِى الْقُبُوْرِ؛
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى جَسَدِ مُحَمَّدٍ فِى الْاَجْسَادِ؛
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِى الْاَرْوَاحِ وَ بَارِكْ وَسَلِّمْ'

- वह तीनों शख्स वज़ीफा खत्म करके यह तरह दुआ माँगे :

''इलाही ! आज फलां मुक़द्दमाकी फरियाद और अपील तेरी सरकारमें हमने दाइर की है । अगर तू भी पराजित करेगा तो

457 क़ैद और बंदसे रक्षाका अमल

जो शख्स ८९ (नवासी) मर्तबह 'يَا مُحْيِيُ' ('या मुह्यी') पढ़ कर अपने ऊपर दम करे, वह हर प्रकारकी क़ैद और बंदसे इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा ।

458 हाकिमसे न्याय प्राप्त करनेका अमल

अगर किसी मुक़द्दमामें हाकिमसे अन्यायका भय हो तो मुक़द्दमाकी सुनाईके समय हररोज़ ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह 'يَا عَدْلُ' ('या अद्लु') पढ़े और हाकिमकी तरफ घ्यान करके दम करे तो इन्शाअल्लाह न्याय होगा ।अन्याय नहीं होगा ।

459 मुक़द्दमामें गवाह जूठी गवाही न दे उसका अमल

अगर किसीके मुक़द्दमाकी सुनाई चालु हो और किसी गवाहसे जूठी गवाहीका संदेह हो तो १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَا جَلِيْلُ' ('या जलीलु') पढ़ कर उस गवाहकी तरफ दम करे तो इन्शाअल्लाह वह गवाह अदालतमें जूठी गवाही नहीं देगा ।

460 बद मिज़ाज हाकिमके सामने हाज़रीका अमल

अगर किसी बद मिज़ाज हाकिमके सामने जाना हो तो ७ (सात) मर्तबह 'يَا بَاعِثُ' ('या बाइसु') पढ़ कर अपने शरीर पर दम करके उसके सामने जाए । इन्शाअल्लाह हाकिम बहुत ही महरबानीका मुआमला करेगा ।

- ४०० (चार सो) ग्राम जवके आटेकी एक रोटी पकाए ।
- २४ (चोबीस) घंटेमें वह रोटी खाए ।
- रात और दिनमें ४१००० (एकतालीस हज़ार) मर्तबह :
  'يَا مَالِكَ الْمُلْكِ' पढ़े ।
- वज़ीफाके आरंभ और अंतमें 'بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ' ('बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम')१०० (एक सो) मर्तबह पढ़े ।
- ७ (सात) दिन तक सतत यह अमल करे ।

इन्शाअल्लाह मुक़द्दमाकी अपीलमें जीत होगी ।

चेतावनी : यह नाम बहुत जलाली है । पढ़नेके दरमियान कोई बदपरहेज़ी न होनी चाहीए । वर्ना नफाकी जगह नुक़सान होगा ।

455 नाहक़ क़ैद अथवा मुक़द्दमासे मुक्तिका अमल

अगर कोई शख्स क़ैदमें अथवा मुक़द्दमामें नाहक़ फँस गया हो तो उसके रिश्तेदार रात और दिन सतत २१००० (इक्कीस हज़ार) मर्तबह 'يَا فَتَّاحُ' ('या फत्ताहु') पढ़े । इन्शाअल्लाह जल्द उसकी मुक्ति होगी ।

456 जूठे फोजदारी मुक़द्दमासे मुक्तिका अमल

अगर कोई शख्स जूठे फोजदारी मुक़द्दमामें फँस गया हो तो तीन दिन तक रातको बारह बजे और दिनको बारह बजे ५००० (पाँच हज़ार) मर्तबह 'يَا مُنْتَقِمُ' ('या मुन्तक़िमु') पढ़े तो इन्शाअल्लाह बहुत जल्द दुश्मन बरबाद हो जाएगा और यह मुबारक नाम पढ़नेवाला जल्द मुक्ति प्राप्त करेगा ।

आघी रातको अथवा दोपहरको ११०१ (एक हज़ार एक सो एक) मर्तबह 'يَـا صَبُـوْرُ' ('या सबूरु') पढ़ कर अल्लाह तआलासे दुआ करे । इन्शाअल्लाह ७ (सात) दिन तक सतत यह अमल करनेसे उसका गुस्सा दूर हो जाएगा ।

465 पत्र अथवा अरज़ीका अच्छा जवाब आनेके लिए अमल

अगर किसीके पत्रका जवाब अथवा अरज़ीका हुक्म न आता हो तो हररोज़ फजरकी नमाज़के बा'द तीन दिन तक १००० (एक हज़ार) मर्तबह 'يَـا مُـجِـيْـبُ' ('या मुजीबु') पढ़ कर कल्पना करे कि मेरे पत्रका जवाब और मेरी अरज़ी पर हुक्म लिख कर आसमानसे घरती पर उतर आया है । इन्शाअल्लाह चंद दिनोंमें पत्र अथवा अरज़ीका अच्छा जवाब आएगा ।

466 फेसला हक़ पर देनेके लिए साहिबे फेसलाको करनेका अमल

हाकिम, क़ाज़ी, मुफती, क़ौमका सरदार, चोघरी, सरपंच अथवा पटेल फेसला देते समय अगर ७ (सात) मर्तबह 'يَا هَادِىْ' (या हादी) पढ़े और फिर फेसला दे तो इन्शाअल्लाह हक़ पर क़ाइम रहेगा ।

461 हाकिमके सामने हाज़रीके समय इज्ज़त प्राप्त करनेका पहला अमल

जो कोई शख्स किसी बडे आदमीके सामने जानेसे डरता हो तो तीन दिन तक हररोज़ ३००० (तीन हज़ार) मर्तबह 'يَا رَافِعُ' ('या राफिउ') पढ़े और फिर यही 'رَافِــعُ' ('राफिउ') पढ़ता पढ़ता हाकिमके सामने जाएगा तो इन्शाअल्लाह हर तरह इज्ज़त प्राप्त करेगा । हाकिम अत्यंत ही नरमीका मुआमला करेगा ।

462 हाकिमके सामने हाज़रीके समय इज्ज़त प्राप्त करनेका दूसरा अमल

अगर कोई शख्स अँगूठीमें 'يَا جَلِيْلُ' ('या जलीलु') कन्दह (अंकित) करके अपने पास रख कर हाकिम अथवा बडे शख्सके सामने जाए तो इन्शाअल्लाह इज्ज़त मिलेगी । हर हाकिमकी नज़र उसके सामने नीची रहेगी ।

463 मज़्लूमकी सिफारिश हाकिम सुने उसका अमल

अगर कोई हाकिम अथवा ज़ालिम किसी मज़्लूमकी सिफारिश सुनता न हो तो ११० (एक सो दस) मर्तबह 'يَا رَؤُوْفُ' ('या रऊफु') पढ़ कर दुआ करे तो इन्शाअल्लाह वह ज़ालिम उस मज़्लूमकी सिफारिश कुबूल करेगा ।

464 हाकिमका गुस्सा दूर करनेका अमल

अगर किसी शख्ससे उसका हाकिम गुस्सा करता हो तो

कुन्से सब **या बारिउ** पैदा किया,
या मुसव्विरु सूरते इशरत बना ।

बख्श **या गफ्फारु** इस्याँ सर ब सर,
नफस पर गालिब तू **या क़ह्हारु** कर ।

बे इवज़ तू रिज़्क़ **या वह्हाबु** दे,
रिज़्क़ **या रज्ज़ाकु** दे हर क़िस्मके ।

खोल **या फत्ताहु** तू रोज़ीके दर,
या अलीमु ख्वार हूँ तू ले खबर ।

तंग कर **या क़ाबिजु** रिज़्क़े पलीद,
रिज़्क़ कर **या बासितु** रिज़्क़े मज़ीद ।

पस्त हो **या खाफिजु** दुश्मन मेरे,
दे मुज़े **या राफिउ** रुत्बे बडे ।

या मुइज्ज़ु मुज़को कर इज़्ज़त अता,
या मुज़िल्लु मुज़को ज़िल्लतसे बचा ।

या समीउ सुन मेरी फरियादको,
या बसीरु देख मुज़ नाशादको ।

या ह–कमु हुक्म पर अपने चला,
डर है **या अद्लु** तेरे इन्साफका ।

या लतीफु मुज़ पे अपना लुत्फ कर,
या कबीरु दिलको कर दे बाखबर ।

अस्माउल् हुस्नाके माध्यमसे दुआ

मुज़को **या अल्लाहु** अपना इश्क़ दे,
हो मुहब्बत सिर्फ तेरे वास्ते ।

मुस्तहिक़ तू ही इबादतका हुवा,
है तू ही मअ्बूद सारी खल्क़का ।

बख्श **या रहमानु** मैं हूँ ख्वारतर,
या रहीमु महरबानी मुज़ पे कर ।

तू ही **या मालिकु** शह हर दो सरा,
मुज़को जन्नत दे जहन्नमसे बचा ।

मुज़को **या कुद्दूसु** कर अैबोंसे पाक,
तू निहायत पाक मैं एक मुश्ते खाक ।

या सलामु दीनों ईमांको मेरे,
रख सलामत अपने फज़्लो लुत्फसे ।

अमन दे **या मुअ्मिनु** मुज़को सदा,
या मुहय्मिनु तू निगहबाँ है मेरा ।

या अजीजु मेरे गालिब होवे सुस्त,
काम **या जब्बारु** मेरे कर दुरुस्त ।

तू है **या मुतकब्बिरु** सबसे बडा,
मुज़को मगरूरोंकी सुहबतसे बचा ।

बे तेरे **या खालिकु** है कौनसा,
जिसने सब खिल्क़तका अंदाज़ह किया ।

या वकीलु कारसाज़े बे कसाँ,

या क़विय्यु ताक़ते बे ताक़ताँ ।

या मतीनु दीन पर रख उस्तुवार,

या वलिय्यु कर मदद लयूलो नहार ।

या हमीदु हम्द है तुज़को सदा,

तू है **या मुह्सी** मुहीते मा सिवा ।

पहले भी **या मुब्दिउ** पैदा किया,

या मुईदु तू ही फिर मर्जअ् हुवा ।

ज़िन्दह **या मुह्यी** हूँ जब तक शाद रख,

जब मरूँ तब **या मुमीतु** याद रख ।

तू ही **या हय्यु** है ज़िन्दह ता अबद,

तू ही **या क़य्यूमु** क़ाइम ला वलद ।

रख गनी मुज़को सदा **या वाजिदु**,

सब बणाई तुज़को है **या माजिदु** ।

है तू ही **या वाहिदु** आली सिफात,

तू ही **या अ–ह–दु** यकता पाक ज़ात ।

या स–म–दु है सबको तेरी जुस्तजू,

सब तेरे मुहताज, बे परवा है तू ।

गर्दिशे गरदूँसे तंग आया हूँ मैं,

तेरे दर पर इल्तिजा लाया हूँ मैं ।

नफस पर **या क़ादिरु** क़ादिर रहूँ,

यूँ जियूँ **या मुक़तदिरु** जब तक जियूँ ।

या हलीमु बुर्दबारी कर अता,
या अज़ीमु है तू ही सबसे बणा ।

या गफ़ूरु बख़्श दे मेरे गुनाह,
या शकूरु शुक्र रख मददे निगाह ।

या अलिय्यु है, बणा रुत्बह तेरा,
या कबीरु तू बडा है तू बणा ।

या हफीज़ु आफतोंसे रख निगाह,
या मुक़ीतु तनमें दे कुव्वतको राह ।

या हसीबु सहल हो मुज़ पर हिसाब,
या जलीलु तू बडा आली जनाब ।

या करीमु तू सखी, मुहताज सब,
या रक़ीबु तू निगहबाँ रोज़ो शब ।

या मुजीबु कर दुआ मेरी कुबूल,
दीनो दुन्यामें न कर मुज़को मलूल ।

इल्म कर **या वासिउ** मुज़ पर फराख,
बअ्द मरने क़ब्र कर मेरी फराख ।

या हकीमु तू है दानाए अमल,
या वदूदु तू मुहिब्बे बे बदल ।

या मजीदु ज़ातमें तू है बणा,
क़ब्रसे **या बाइसु** मुअ्मिन उठा ।

या शहीदु हाज़िरों आगाहे कुल,
तू ही है या हक्क़ शहिन्शाहे कुल ।

मुज़को **या मुग्नी** तू बे परवा बना,
हो न कुछ **या मानिउ** नुक़सान मेरा ।

जो ज़रर **या ज़ार्रु** हो दूर रख,
नफासे **या नाफिउ** मस्रूर रख ।

दिलको **या नूरु** मेरे रोशन बना,
राह **या हादी** मुज़े सीधी दिखा ।

या बदीउ तू है बणा साहिबे कमाल,
कर दिया आलमको पैदा बे मिसाल ।

तू ही **या बाक़ी** रहे बाक़ी सदा,
तू ही **या वारिसु** वारिस मेरा ।

या रशीदु राह नेकीकी दिखा,
नारे दोझखसे इस आसीको बचा ।

तू ही **या वाली** है सब पर हुक्मराँ,
सब जहाँ महकूम तेरा बे गुमाँ ।

या सबूरु सब्रकी तव्फीक़ दे,
कर मुजल्ला मुज़को अपने खुल्क़से ।

हो चुके निनानवे नाम ए अखी,
या बर्रु की तरह हैं चंद और भी ।

या इलाही बह्रे खत्मिल् मुरसलीन ,
मुअ्मिनोंको कर अता खुल्दे बरीं ।

या मुक़द्दिमु होवे अगलोंमें गुज़र,
या मुअख़्ख़िरु पिछेवालोंमें न कर ।

तू ही **या अव्वलु** अव्वलमें था,
फिर तू ही **या आख़िरु** होगा सदा ।

उस पर **या ज़ाहिरु** ज़ाहिर हुवा,
सन्अतों पर जो कोई ज़ाहिर हुवा ।

वहमसे **या बातिनु** तू है निहाँ,
तुज़को पावे वहम यह ताक़त कहाँ ।

तेरा **या मुतआलु** है रुत्बह बुलंद,
हूँ तेरे अेहसानमें **या बर्रु** बंद ।

मेरी **या तव्वाबु** कर तव्बह कुबूल,
रहम कर **या मुन्तक़िमु** बदियोंको भूल।

या अफुव्वु कर गुनाहसे दरगुज़र,
या रऊफु महरबानी कर नज़र ।

मालिकुल् मुल्कि है बस तेरा ही नाम,
दे मुज़े मुल्के क़िनाअतमें मक़ाम ।

जुल् जलालि तू ही **वल् इकराम** है,
मुज़े बखश्ना कया बणा सा काम है ।

अदलसे **या मुक़्सितु** डरता हूँ मैं,
फज़्लकी उम्मीद बस करता हूँ मैं ।

जमअ कर **या जामिउ** दिलको मेरे,
या गनिय्यु कर दे बे परवा मुज़े ।